

સામાજિક સેવા સંસ્થા  
અમદાવાદ  
સામાજિક સેવા સંસ્થા

૧૯૩૫

## अथानुक्रमणिका.

अंक. ग्रंथोनानाम. पृष्ठ. अंक. ग्रंथोनानाम. पृष्ठ.

<p>१ नवकार .. .. १</p> <p>२ पंचिंदिअ .. .. १</p> <p>३ खमासमण .. .. १</p> <p>४ सुगुरुनेसातासुखपृष्ठा २</p> <p>५ इरियावहिया .. .. २</p> <p>६ तस्सउत्तरी .. .. २</p> <p>७ अन्नञ्जससिएणं .. ३</p> <p>८ लोगस्स .. .. ३</p> <p>९ सामायकनुपच्च स्काण .. .. ४</p> <p>१० सामायकपारवानुं ४</p> <p>११ जगचिंतामणिचै त्य वंदन .. .. ५</p> <p>१२ जिंकिंचि .. .. ६</p> <p>१३ नमुबुणं .. .. ६</p> <p>१४ जावंतिचेइआइं .. ७</p>	<p>१५ जावंतकेविसाहु .. ७</p> <p>१६ नमस्कार .. . . . ७</p> <p>१७ उपसर्गहरस्तव .. ७</p> <p>१८ जयवीराय .. .. ८</p> <p>१९ अरिहंतचेइआणं .. ८</p> <p>२० कल्याणकंदंस्तुति .. ९</p> <p>२१ संसारदावानीस्तुति. ९</p> <p>२२ पुरस्करवरदी .. . . १०</p> <p>२३ सिद्धाणंबुद्धाणं .. ११</p> <p>२४ वेयावच्चगराणं .. ११</p> <p>२५ जगवानादिवंदने .. १२</p> <p>२६ देवसिअप्रतिक्रम एठाउं .. .. १२</p> <p>२७ इत्तामिगामि .. १२</p> <p>२८ अतिचारनीगाथा आठ .. .. १२</p>
---	---

अंक. ग्रंथोनानाम. पृष्ठ.

३९ सुगुरुवांदणा .. १३

३० देवसिअंआलोउं १४

३१ सातलाख .. १४

३२ अठारपापस्थानक १५

३३ सवस्सवि .. १५

३४ इत्तामिपडिकमिउं १६

३५ वंदितासूत्र .. १६

३६ अप्पुठिउं .. १०

३७ आयरिअउवव्वाय ११

३८ नमोस्तुवर्द्धसा

नाय .. ११

३९ विशाललोचन .. १२

४० श्रुतदेवखेत्रदे

वस्तुति .. १२

४१ खित्तदेवआएकरे १२

४२ कमलदलस्तुति .. १२

४३ आढाइजेसुमुनिवं. १२

४४ वरकनक .. १३

४५ लघुशांतिस्तवन .. १३

अंक. ग्रंथोनानाम. पृष्ठ.

४६ चउक्कसाय .. १५

४७ नरहेसरनीसव्वाय १५

४८ मन्हजिणाणंणी

सव्वाय .. १७

४९ पोसहनुंपच्चरकाण १७

५० पोसहपारतागाथा १८

५१ तीर्थवंदना .. १८

५२ माहावीरजिनठंद. ३०

५३ गणधरस्तवन .. ३१

५४ सीमंधरजिनचै

त्यवंदन .. ३१

५५ सीमंधरजिनस्तवन ३३

५६ सीमंधरजिनथोय ३३

५७ सिद्धाचलजीनु

चैत्यवंदन ३४

५८ सिद्धाचलनुस्तवन ३४

५९ सिद्धाचलनीथोय ३५

६० सामायकलेवा

नोविधि .. ३५

अंक. ग्रंथोनानाम. पृष्ठ.

६१ सामायकपारवा  
नोविधि .. .. ३६

६२ पडिलेहणकरवा  
नोविधि .. .. ३६

६३ देववांदवानोविधि ३७

६४ देवसिप्रतिक्रम  
णविधि .. .. ३८

६५ राइप्रतिक्रमणविधि ४१

६६ पञ्चस्काणपारवा  
नोविधि .. .. ४३

६७ नमुक्कारसहिनुं  
पञ्चस्काण .. .. ४४

६८ पोरिसि साढ पोरि  
सिनुं पञ्चस्काण .. ४४

६९ चउविहारनुं  
पञ्चस्काण .. .. ४५

७० तिविहारनुं प  
ञ्चस्काण .. .. ४५

७१ डुविहारनुंपञ्चस्का ४५

अंक. ग्रंथोनानाम. पृष्ठ.

७२ क्रोधनीसद्याय .. ४५

७३ माननीसद्याय .. ४६

७४ मायानी सद्याय .. ४६

७५ लोजनी सद्याय .. ४७

७६ श्री पार्श्वनाथनी  
आरति. .. .. ४८

७७ श्रावकनीकरणी .. ४९

७८ श्रीआदिजिनस्तु ५१

७९ श्रीतीर्थमाला .. ५२

८० सिद्धाचलजीनु  
स्तवन .. .. ५३

८१ श्रीसिद्धाचलस्तु ५५

८२ सीमंधरजिनथोय ५५

८३ श्रीरूपनजिनुंचैत्य  
वंदन .. .... ५६

८४ श्रीमंगलाचारप्रजातस  
मयेतेनीसाथेगौतमस्वा

मीनुं अष्टकपणढे ५६

८५ सोलसतीउनीसद्या ५९



॥ श्री गौतम गुरुन्योनमः ॥  
॥ अथ श्राध प्रतिक्रमण सूत्रादि प्रारंभः ॥

॥ अथ नवकार पंच मंगल रूप ॥

॥ नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरि  
आणं, नमो उवसायाणं, नमोलोए सब्ब साहूणं, एसो  
पंच नमुक्कारो, सब्बपावप्पणासणो, ॥ मंगलाणंच सब्बेसिं,  
पढमं हवइ मंगलं, ॥ इति ॥ १ ॥ पदनव, संपदानव,  
गुरुअद्धर सात, लघुअद्धर एकशठ, सर्वाअद्धर अडसठ.

॥ अथ पंचिंदिअ ॥

॥ पंचिंदिअ संवरणो, तह नवविह बंजचेर गुत्ति धरो ॥  
चउविह कसाय मुक्को ॥ इअ अछारस गुणेहि संजुत्तो  
॥ १ ॥ पंचमह वय लुत्तो ॥ पंच विहायार पालण  
समत्तो ॥ पंच समित्ति ति गुत्तो ॥ ठत्तीस गुणेहि गुरु  
मत्त ॥ २ ॥ इति ॥ २ ॥ पद आठ, गाथा बे, गुरुअद्ध  
रदश, लघुअद्धर सीतेर, सर्वाद्धर ऐंसी.

॥ अथ खमासमण ॥

॥ इहामि खमासमणो ॥ वंदितं जावणिक्काए ॥ नि  
सिद्धिआए ॥ मत्तएण वंदामि ॥ इति ॥ ३ ॥ गुरुअद्धर  
र त्रण, लघुअद्धर पचीश, सर्वाद्धर अछावीश.

( १ )

॥ अथ सुगुरुने सातासुख पृष्ठा ॥

॥ इष्ठाकार, सुहराइ, सुहदेवसि, सुख तप, शरीर निरा  
बाध, सुख संयमयात्रा, निर्वहोढोजी, स्वामी सा  
ताढेजी, जात पाणिनो लान देज्योजी ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ इरियावहिया ॥

॥ इष्ठाकारेण संदिसह जगवन् इरियावहियं, पडिक्क  
मामि, इहं इहामि पडिक्कमिउं ॥ १ ॥ इरिया वहिया  
ए, विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे,  
हरियक्कमणे, उंसाउत्तिंग पणग दग, मट्टी मक्कडा संता  
णा, संकमणे, जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदि  
या, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अजिहया, वत्ति  
आ, लेसिआ, संघाइआ, संघट्टिया, परियाविया, किला  
मिया, उहविया, ठाणाउठाणं, संकामिया, जीवियाउ,  
ववरोविया, तस्स मिहामि डुक्कडं ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ अथ तस्सउत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्चित्त करणेणं, विसोही  
करणेणं, विसह्वी करणेणं, पावाणं कम्माणं, निग्घाय  
ण छाए. ठामि काउस्सग्गं इति ॥ ६ ॥ ए पांचमा, षष्ठा  
बेसूत्रनामली, पद बत्तीश, संपदा आठ, गुरुअद्धर चोवी  
स, लघुअद्धर एकसोने पंचोतेर, सर्वाद्धर एकसोने नवाणु.

॥ अथ अन्नञ्च उससिएणं ॥

॥ अन्नञ्च उससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, ढीए  
णं, जंजाइएणं, उरुएणं, वाय निसग्गेणं, जमलिए पि  
त्तमुह्वाए, सुदुमेहिं अंग संचालेहिं, सुदुमेहिं खेल संचा  
लेहिं, सुदुमेहिं दिठि संचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं,  
अजग्गो अविराहिउ, दुक्किमे काउस्सग्गो, जाव अरिहं  
ताणं, जगवंताणं, नमुक्कारेणं, नपारेमि, तावकार्यं, ठा  
णेणं, मोणेणं, जाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि. इति ॥७॥  
संपदापांच, पद अछावीश, गुरुअद्धरतेर, लघुअद्धर ए  
कसोने सत्तावीश, सर्वाद्धर एकसोने चालीश.

॥ अथ लोगस्स ॥

॥लोगस्स उल्लोअगरे ॥ धम्म तिब्बयरे जिणे ॥ अ  
रिहंते कित्तइस्सं ॥ चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसज  
मजिअंच वंदे ॥ संजव मजिणंदणंच सुमइंच ॥ पउम  
प्पहं सुपासं ॥ जिणंच चंदप्पहंवंदे ॥ २ ॥ सुविहिंच  
पुप्फदंतं ॥ सीअल सिज्जंस वासुपुज्जंच ॥ विमल मणं  
तं च जिणं ॥ धम्मं संतिंच वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं  
अरंच मद्धिं ॥ वंदे सुणिसुवयं नमिजिणंच ॥ वंदामि  
रिद्धेमिं ॥ पासं तह वद्धमाणंच ॥ ४ ॥ एवं मए अ  
निशुआ ॥ विदुय रय मला पहीण जर मरणा ॥ च



उवीसंपि जिणवरा ॥ तिब्बयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कि  
 त्तिय वंदिय महिया ॥ जेए लोगस्स उत्तमासिद्धा ॥  
 आरुग्ग बोहिजानं ॥ समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदे  
 सु निम्मजयरा ॥ आइस्सेसु अहियं पयासयरा ॥ सागर  
 वर गंजीरा ॥ सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ सबलोए.  
 इति ॥ ७ ॥ पदअछावीश, संपदा अछावीश, गुरुअद्धर अ  
 छावीश, लघुअद्धर बसेने बत्रीश, सर्वाद्धर बसेने साठ.

॥ अथ सामायकनुपञ्चखाण ॥

॥करेमि जंते सामाइयं, सावळं जोगं, पञ्चस्कामि,  
 जाव निअमं, पळ्हुवासामि, डुविहं, तिविहेणं, मणेणं,  
 वायाए, काएणं, नकरेमि, नकारवेमि, तस्सजंते, पडिक्क  
 मामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि. इति॥ ७ ॥

॥ अथ सामायक पारवानुं ॥

॥सामाइअ वयङ्कुत्तो ॥ जाव मणे होइ नियम संजु  
 त्तो ॥ ठिन्नइ असुहं कम्मं ॥ सामाइअ जत्तिआवारा ॥  
 ॥ १ ॥ सामाइअं मिउकए ॥ समणोइव सावउं हवइ ज  
 म्हा ॥ एएण कारणेणं ॥ बहुसो सामाइअं कुळा ॥ २ ॥  
 सामायिक विधिं लीधूं, विधिं पारिउं ॥ विधिकरतां जे  
 कोइ अविधि दुउंहोए ॥ तेसविहुं मन वचन कायाये  
 करी ॥ मिहामिडुक्कडं ॥ इति ॥ १० ॥

॥ अथ जगचिंतामणि चैत्यवन्दन ॥

॥ इष्ठाकारेण संदिसह जगवन् ॥ चैत्यवन्दन करुं, इब्बं ॥  
जग चिंतामणि जगनाह, जग गुरु जगरस्कण ॥ ज  
ग बंधव जग सत्त्ववाह, जगजाव विअस्कण ॥ अछा  
वय संतविअरूव, कम्मठ विणासण ॥ चउवीसंपि  
जिणवर जयंतु, अण्णडिहय सासण ॥ १ ॥ कम्मजू  
मिहिं कम्मजूमिहिं, पढम संघयणि ॥ उक्कोसय स  
त्तरिसय, जिणवराण विहरंतल्लइ ॥ नवकोडिहिं  
केवलिण, कोडिसहस्स नव साहु गम्मई ॥ संपइ जि  
णवर वीसमुणि, बिहुंकोडिहिं वरनाण ॥ समणह को  
डि सहसइअ, शुणिजिअ निच्च विहाणि ॥ २ ॥ ज  
यउ सामीअ जयउ सामीअ, रिसह सत्तुंजि ॥ उक्कित  
पहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चरि मंण ॥ जरुअ  
बहिं मुणिसुव्वय, मुहरिपास इह डुरिअ खंण ॥  
अवर विदेहिं तिब्बयरा, चिहुं दिसि विदिसि जिंकेवि ॥  
तीआणागय संपइअ, वंडु जिण सवेवि ॥ ३ ॥ सत्ता  
णवइ सहस्सा ॥ लस्का ठण्णन्न अठकोडीउ ॥ बत्तीस  
य बासिआइं ॥ तिअलोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥ पनरस  
कोडि सयाइं ॥ कोडी बायाल लस्क अडवन्ना ॥ ठत्तीस  
सहस्स असिइं ॥ सासय बिंबाइं पणमामि ॥ ५ ॥ इति ॥ १ ॥

( ६ )

॥ अथ जंकिंचि ॥

॥ जं किंचि नाम तिष्ठं॥सग्गे पायात्त माणुसेलोए ॥  
जाइं जिण बिंबाईं ॥ ताईं सवाईं वंदामि ॥इति॥१२॥

॥ अथ नमुबुणं वा सकस्तव ॥

॥ नमुबुणं, अरिहंताणं, जगवंताणं, आईगराणं,  
तिब्बयराणं, सयं संबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिस सीहा  
णं, पुरिसवर पुंनरीआणं, पुरिसवर गंध हब्बीणं, लोशु  
त्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोग पईवाणं,  
लोग पळ्ळोअ गराणं, अजय दयाणं, चस्कुदयाणं, म  
ग्गदयाणं, सरण दयाणं, बोहि दयाणं, धम्म दयाणं,  
धम्मदेसयाणं, धम्म नायग्गाणं, धम्म सारहीणं, धम्म  
वर चाउरंत चक्कवट्टीणं, अप्पडिहय वर नाणं, दंसण  
धराणं, विअट्ट ठउमाणं, जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं  
तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं, सब  
नूणं, सब दरसिणं, सिव मयल मरुअ मणंत मरुकय  
मवाबाह, मपुणराविति सिद्धिगई, नाम धेयं, ठाणं संप  
त्ताणं, नमो जिणाणं, जिय नयाणं, जेअ अईआ सिद्धा,  
जेअ नविस्संत णागए काळे ॥ संपइअ वट्टमाणा, सब्बे  
तिविहेण वंदामि ॥१॥ इति॥१३॥ संपदानव, गाथाएक,

पदतेत्रीश, गुरुअक्षर तेत्रीश, लघुअक्षर बसेने चोशठ,  
सर्वाक्षर बसेने सत्ताणु.

॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

॥जावंति चेइआइं,उठ्ठेअ अहेअ तिरिअ जोएअ॥सवाइं  
ताइं वंदे ॥ इहसंतो तठ संताइं ॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ जावंत केविसाहू ॥

॥जावंत केवि साहू॥नरहे रवए महाविदेहेअ॥सवेसि  
तेसि पणउ ॥ तिविहेण तिदंम विरयाणं॥१॥इति॥१५॥

॥ अथ नमस्कार ॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुन्यः ॥ इति १६

॥ अथ उपसर्ग हर स्तवन ॥

॥ उवसग्ग हरं पासं ॥ पासं वंदामि कम्म घण मुक्कं ॥  
विसहर विस निन्नासं ॥ मंगल कट्ठाण आवासं ॥ १ ॥  
विसहर फुलिंग मंतं ॥ कंठे धारेइ जो सया मणुउ ॥ त  
स्स गह रोगमारी ॥ डुठ जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चि  
ठउ दूरे मंतो ॥ तुप्पणामो वि बहु फलोहोइ ॥ नर  
तिरि एसुवि जीवा ॥ पावैति न डुस्क दोगच्चं ॥ ३ ॥ तुह  
सम्मत्ते लहे ॥ चिंतामणि कप्पपायव प्रहिए ॥ पावंति  
अविग्घेणं ॥ जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ सुंथुउ म  
हायस ॥ नत्तिप्पर निप्परेण हिअएण ॥ ता देव दिऊ बो

हिं ॥ नवे नवे पास जिणचंद ॥५॥ इति ॥ १७ ॥ पदवी  
श, संपदावीश, गुरुअक्षरवीश, लघुअक्षर एकशोने पांस  
ठ, सर्वाक्षर एकसोने पंच्याशीठे.

॥ अथ जयवीअराय ॥

॥ जय वीअराय जगगुरु ॥ होउ मम तुहप्पजावउ  
जयवं ॥ नवतिवेउ मग्गाणु, सारिआ इठ फल सिद्धी ॥ १ ॥  
लोग विरुद्ध चाउ ॥ गुरुजण पूआ परबु करणंच ॥ स  
हगुरु जोगोतवयण, सेवणा आनक मखंमा ॥ २ ॥ वा  
रिऊइ जइवि निआण, बंधणं वीअराय तुह समए ॥  
तहवि मम दुऊ सेवा ॥ नवे नवे तुम्ह चलणाणं ॥ ३ ॥  
डुक्खउ कम्मखउ ॥ समाहि मरणंच बोहिलाजोअ ॥  
संपऊउ मह एअं ॥ तुह नाह पणाम करणेणं ॥ ४ ॥  
सर्व मंगल मांगल्यं ॥ सर्व कल्याण कारणं ॥ प्रधानं सर्व  
धर्माणां ॥ जैनं जयति शासनं ॥ ५ ॥ इति ॥ १८ ॥

॥ अथ अरिहंत चेइआणं ॥

॥ अरिहंत चेइआणं, करेमि काउस्सगं ॥ १ ॥ वंद  
ण वत्तिआए, पूअण वत्तिआए, सक्कार वत्तिआए,  
सम्माण वत्तिआए, बोहिलाज वत्तिआए, निरुवसग्ग  
वत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहा  
ए, वट्ठमाणीए, ठामि काउस्सगं ॥ ३ ॥ इति ॥ १९ ॥

अन्नञ्च ० ॥ पदपंदर, संपदात्रण, गुरुअक्षरसोल, जयुअक्षरतहोतेर, सर्वाक्षर नेव्यासीने.

॥ अथ कल्याणकंदं स्तुति ॥

॥ कल्याण कंदं पढमं जिणेंदं ॥ संतिं तउ नेमिजिणं मु  
णिंदं ॥ पासं पयासं सुगुणिक ठाणं ॥ नत्तीय वंदे सिरि  
वद्धमाणं ॥ १ ॥ अप्पार संसार समुद्धपारं ॥ पत्ता सिवं  
दिंतु सुद्ध सारं ॥ सवे जिणिंदा सुरविंद वंदा ॥ कट्ठाण  
वद्धीण विसाल कंदा ॥ २ ॥ निव्वाण मग्गे वर जाण क  
प्पं ॥ पणासिया सेस कुवाय दप्पं ॥ मयं जिणाणं सर  
णं बुहाणं ॥ नमामि निच्चं तिजग प्पहाणं ॥ ३ ॥ कुं  
दिंडु गोस्कीर तुसार वन्ना ॥ सरोज हत्ता कमले निसन्ना ॥  
वाएसिरि प्पुब्बय वग्गहत्ता ॥ सुहाय सा अम्ह सया प  
सत्ता ॥ ४ ॥ इति ॥ १० ॥

॥ अथ संसारदावानीस्तुति ॥

॥ संसार दावानल दाह नीरं ॥ संमोह धूली हरणे समीरं ॥  
माया रसा दारण सारसीरं ॥ नमामि वीरं गिरिसारधी  
रं ॥ १ ॥ जावावनाम सुर दानव मानवेन ॥ चूला वि  
लोल कमलावलि मालितानि ॥ संपूरिताजिनतलोकस  
मीहितानि ॥ कामं नमामि जिनराज पदानि तानि ॥ २ ॥  
बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूरा निरामं ॥ जीवाहिंसा

विरलजहरीसंगमागाह देहं ॥ चूलावेलं गुरुगममणीसं  
 कुलं दूरपारं ॥ सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधुसे  
 वे ॥ ३ ॥ आमूनालोलधूनीबहुलपरिमलालीढ  
 लोलालिमाला ॥ ऊंकारारावसारामलदलकमलागा  
 रनूमीनिवासे ॥ ढायासंनारसारेवरकमलकरेतार  
 हारानिरामे ॥ वाणीसंदोहदेहे नवविरहवरंदेहि मे  
 देवि सारं ॥ ४ ॥ इति ॥ ११ ॥ पद सोल, संप  
 दा सोल, अक्षरबसेने बावनढे.

॥ अथ पुस्करवरदी ॥

॥ पुस्करवर दीवहे ॥ धायइ संमेश्र जंबूदीवेश्र ॥  
 नरहे रवय विदेहे ॥ धम्माङ्गरे नमंतामि ॥ १ ॥ तम  
 तिमिर पद्मल विद्धं, सणस्स सुरगण नदि महिश्च  
 स्स ॥ सीमा धरस्स वंदे ॥ पप्फोडिश्च मोह जालस्स  
 ॥ २ ॥ जाई जरा मरण सोग पणासणस्स ॥ कल्लाण  
 पुस्कल विसाल सुहावहस्स ॥ को देव दाणव नरिंद  
 गणञ्चिश्चस्स ॥ धम्मस्स सार मुवलप्प करेपमायं ॥ ३ ॥  
 सिद्धेजो पयउ नमो जिणमए नंदीसया संजमे ॥ देवं  
 नाग सुवन्नकिन्नरगण सप्पश्च नावञ्चिए ॥ लोगो जह  
 पइच्छिउ जगमिणं तेलुक्क मच्चासुरं ॥ धम्मो वट्ठउ सास  
 उ विजयउ धम्मुत्तरं वट्ठउ ॥ ४ ॥ सुअस्सजवगउ ॥ इति

॥ ११ ॥ पद सोल, संपदा सोल, गुरुअक्षर चोत्रीश,  
लघुअक्षर एकसोने व्यासी, सर्वाक्षर बसेने सोल. करे  
मिकाउस्सग्गं, वंदण वत्तिआए० ॥

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥ पारगयाणं परंपर गयाणं ॥ लो  
अग्ग ॥ मुवगयाणं नमो सया सब सिद्धाणं ॥ १ ॥ जो  
देवाणवि देवो ॥ जंदेवा पंजली नमंसंति ॥ तं देव देव  
महिअं ॥ सिरसावंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो ॥  
जिणवर वसहस्स वद्धमाणस्स ॥ संसार सागराउ ॥  
तारेइ नरंव नारिंवा ॥ ३ ॥ उळ्ळित सेल सिहरे ॥ दिस्का  
नाणंच निसिहिआजस्स ॥ तंधम्म चक्कवाट्ठिं ॥ अरिठ्ठने  
मिं नमंसांमि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दस दोय, वंदिया  
जिणवरा चउव्वीसं ॥ परमठ निठिअठा ॥ सिद्धा सिद्धिं  
मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ अथ वेयावच्चगराणं ॥

॥ वेयावच्चगराणं ॥ संतिगराणं ॥ सम्मदिठि समाहि  
गराणं ॥ इति ॥ १४ ॥ ए त्रेवीशमां अने चोवीशमां  
बने सूत्रना मलीने पद वीश, संपदा वीश, गुरु अक्षर  
एकत्रीश, लघु अक्षर एकसोने संडसठ, सर्वाक्षर एक  
सोने अछाणु ठे. ॥ करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नब्ब० ॥



॥ अथ जगवानादि वंदन ॥

॥ जगवान्हं आचार्यहं उपाध्यायहं सर्वसाधुहं ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ अथ देवसिद्धिप्रतिक्रमणो गानं ॥

इह्वा कारेण संदिसह जगवन् ॥ देवसिद्धि पडिक्कम  
णो गानं ॥ इहं सबस्सवि देवसिद्धि दुच्चित्तिद्धि दुप्पासि  
अ दुच्चिद्धि मिह्मामि दुक्कडं ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ इह्मामि गानं ॥

॥ इह्मामि गानं काउस्सग्गं, जोमे देवसिद्धि अई  
आरो कउ, काइउ, वाइउ, माणसिद्धि, उस्सुत्तो, उम्म  
ग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुप्पाउ, दुच्चिचित्तिद्धि, अ  
णायारो, अणिद्धिअवो, असावग पाउग्गो, नाणं तह  
दंसणे चरित्ताचरित्ते ॥ सुए सामाइए, तिह्मं गुत्तीणं,  
चउएह्मं कसायाणं, पंचएह्मं मणुवयाणं, तिह्मं गुण  
वयाणं, चउएह्मं सिस्का वयाणं, बारस विहस्स  
सावग धम्मस्स ॥ जं खंमिअं, जंविराहिअं, तस्स मि  
ह्मामिदुक्कडं ॥ इति ॥ १७ ॥ गुरुअद्धर अछावीश, लघु  
अद्धर एकसोने पांत्रीश, सर्वाद्धर एकशोने त्रेसठे.

॥ अथ अतिचारनी गाथा आठ ॥

॥ नाणंमि दंसणंमिअ ॥ चरणंमि तवंमि तहय विरि  
यंमि ॥ आयरणं आयारो ॥ इअ एसो पंचहा नणिउ

॥ १ ॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहयनिएहव  
 ए ॥ वंजण अड तडुनए ॥ अठविहो नाणमायारो  
 ॥ २ ॥ निस्संकिअ निक्कंखिअ ॥ निव्वितिगिह्वा अमूढ  
 दिछीअ ॥ उववूह थिरीकरणे ॥ वड्डह पनावणे अठ  
 ॥ ३ ॥ षणिहाण जोगजुत्तो ॥ पंचहिं समीहिं तीहिं  
 गुत्तीहिं ॥ एस चरित्तायारो ॥ अठविहो होइ नायवो ॥ ४ ॥  
 बारस विहंमिवि तवे ॥ सप्पितर बाहिरे कुसल दिठे ॥  
 अगिलाइ अणाजीवी ॥ नायवो सो तवायारो ॥ ५ ॥  
 अणसण मूणो अरिया ॥ वित्ती संखेवणं रसच्चाउ ॥  
 काय किलेसो संलीण, याय बसो तवोहोइ ॥ ६ ॥ पा  
 यच्चित्तं विणउ ॥ वेयावच्चं तहेव सस्साउ ॥ जाणं उस्स  
 ग्गोविअ ॥ अप्पितरउ तवो होइ ॥ ७ ॥ अणगूहिअ  
 बल विरउ ॥ पक्कमइ जो जहुत्त माउत्तो ॥ जुंजइअ  
 जहा थामं ॥ नायवो वीरिआयारो ॥ ८ ॥ इति ॥ १८ ॥

॥ अथ सुगुरु वांदणा ॥

॥ इहामि खमासमाणो, वंदितं ॥ जावणिज्जाए, निसीहि  
 आए, अणुजाणह मेमिउग्गहं निसिही ॥ अहो कायं  
 काय संफासं ॥ खमणिज्जो ने किज्जामो ॥ अप्पकिलं  
 ताणं बहुसु नेणने ॥ दिवसो वड्कंतो जत्ताने ॥ जवणि  
 जंचने खामेमि खमासमाणो ॥ देवसिअं वड्कमं आव

सिञ्चाए ॥ पडिक्कमामि खमासमणाणं ॥ देवसिञ्चाए  
 आसायणाए ॥ तिन्नीसन्नयराए जंकिंचि मिञ्चाए ॥ मण  
 डुक्कडाए वय डुक्कडाए ॥ काय डुक्कडाए कोहाए माणाए  
 मायाए लोनाए सब्बकालिञ्चाए ॥ सब मिञ्चोवयाराए ॥  
 सब धम्माइक्कमणाए ॥ आसायणाए जोमे अइञ्चारो क  
 उं ॥ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि ॥ निंदामि गरिहा  
 मि अण्णाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ ॥ इति ॥ १९ ॥  
 बीजीवारनेंवांदणे आवसिञ्चाए ए पदनकहेवुं राइ प  
 रिकि चोमासी संवत्सरिं आम पाछकेहवो ॥ राइवइ कं  
 ता, चउमासीवइकंता, परकोवइकंतो, संवत्तरोवइकंतो,  
 एम कहेवुं. एमां पद अछावन, गुरुअद्धर पचीश, लघु  
 अद्धर बसेने एक, सर्व मलीबसेने ठवीश अद्धरोठे.

॥ अथ देवसिञ्चंआलोउं ॥

॥ इञ्चाकारेण संदिसह जगवन् ॥ देवसिञ्चं अलोउं  
 इञ्चं ॥ आलोएमि जोमे देवसिउं ॥ ॥ इति ॥ २० ॥

॥ अथ सातलाख ॥

॥ सातलाख पृथविकाय ॥ सातलाख अप्पकाय ॥ सात  
 लाख तेउकाय ॥ सातलाख वाउकाय ॥ दशलाख प्रत्य  
 कवनस्पति काय ॥ चउदलाख साधारण वनस्पतिकाये ॥  
 बेलाख बेरेंडी ॥ बेलाख तेरेंडी ॥ बेलाख चोरिंडी ॥ चारला

ख देवता ॥ चारलाख नारकी ॥ चारलाख तिर्यंच पंचें  
 झी ॥ चौदलाख मनुष्य, एवंकारे ॥ चौरासोलाख जीवा  
 योनीमाहिं, माहारेजीवे जेकोऽजीव ॥ हण्योहोय, हणा  
 व्योहोय, हणताप्रत्यें अनुमोद्योहोय, तेसवेहुं मन  
 वचन कायाए करि ॥ मिष्ठामि डुक्कडं ॥ इति ॥ ३१ ॥

॥ अथ अठारपापस्थानक ॥

॥ पेहेले प्राणातिपात ॥ बीजे मृषावाद ॥ त्रीजे अदत्तादान ॥  
 चोथे मैथुन ॥ पांचमे परिग्रह ॥ षष्ठे क्रोध ॥ सातमे मान ॥  
 आठमे माया ॥ नवमे लोच ॥ दशमे राग ॥ इग्यारमे द्वेष ॥  
 बारमें कलह ॥ तेरमें अन्याख्यान ॥ चौदमें पैसुन ॥ पन्नरमें  
 रति अरति ॥ सोलमें परपरिवाद ॥ सत्तरमें माया मृषा  
 वाद ॥ अठारमें मिथ्यात्व शत्र्य ॥ एअठार पापस्थान  
 मांहिं ॥ माहारेजीवे जेकोऽसेव्युंहोय ॥ सेवराव्युंहोय ॥  
 सेवताप्रतें ॥ अनुमोद्युंहोय, तेसवेहुं, मन वचन काया  
 एकरी ॥ तस्स मिष्ठामि डुक्कडं ॥ इति ॥ ३२ ॥

॥ अथ सवस्सवि ॥

॥ सवस्सवि, देवसिअ, डुच्चिंतिअ, डप्पासिअ,  
 डुच्चिअ ॥ इच्छाकारेण संदिसह जगवन्इहं ॥ तस्स  
 मिष्ठामि डुक्कडं. इति ॥ ३३ ॥

॥ इहामि पडिकमीउं ॥

॥ जोमे देवसिउंअइआरोकउं० ॥ इति ॥ ३४ ॥

॥ अथ श्रावक पडिकमणा सूत्र ॥ अथवा वंदितासूत्र ॥

॥ वंदितु सव सिद्धे॥धम्मयारिएअ सवसादूअ॥इहामि पडिकमिउं॥सावगधम्मा इआरस्स॥१॥जोमेवयाइयारो॥ नाणे तह दंसणे चरित्तेअ ॥ सुद्धुमोअ बायरोवा ॥ तंनिंदे तंच गरिहामि॥२॥डुविहे परिग्गहंमि॥ सावक्के बहुविहेअ आरंजे ॥ कारावणेअ करणे ॥ पडिकमे देसिअं सवं ॥३॥ जं बधं मिंदिएहिं ॥ चउहिं कसाएहिं अप्पसब्बेहिं ॥ रागेणव दोसेणव ॥ तंनिंदे तंच गरिहामि ॥ ४ ॥ आगम ए निग्गमणे ॥ ठाणे चंकमणे अणानोगे ॥ अनिउगे अ निउगे ॥ पडिकम्मे० ॥५॥ संका कंख विगिह्वा ॥ पसं स तह संथवो कुलिंगीसु ॥सम्मत्तस्स इआरे ॥पडिक०॥ ॥ ६ ॥ ठक्काय समारंजे ॥ पयणेअ पयावणेअ जेदोसा॥ अत्तछाय परछा ॥ उनयछा चेव तंनिंदे ॥ ७ ॥ पंचएह मणुवयाणं ॥ गुणवयाणंच तिएह मइयारे ॥ सिस्काणंच चउएहं ॥ पडिकमे० ॥ ८ ॥ पढमे अणुवयंमि ॥ यूल्लग पाणाइवाय विरईउं ॥ आयरिअ मप्पसब्बे ॥ इहपमा य प्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वह बंध ठविह्बेए ॥ अइ नारे नत्त पाण बुह्बेए ॥ पढम दयस्सइआरे ॥ पडिकमे० ॥१०॥

बीए अणुवयंमी ॥ परियूलग अलिअ वयण विरईउ ॥  
 आयरिअ मप्पसत्ते ॥ इत्त पमाय प्पसंगेणं ॥ ११ ॥  
 सहसा रहस्सदारे ॥ मोसुवएसेअ कूडलेहेअ ॥ बीअ  
 वयस्स इआरे ॥ पडिक्कमे० ॥ १२ ॥ तइए अणुवयंमि ॥  
 यूजग परदव हरण विरईउ ॥ आयरिअ मप्पसत्ते ॥  
 इत्त पमाय प्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहड प्पउगे ॥ तप्प  
 डिहूवे विरूढ गमणेअ ॥ कूड तुल कूडमाणे ॥ पडि  
 क्कमे० ॥ १४ ॥ चउथे अणुवयंमि ॥ निच्चं परदार गम  
 ण विरईउ ॥ आयरिअ मप्पसत्ते ॥ इत्त पमाय प्पसंगेणं  
 ॥ १५ ॥ अपरिङ्गहिआ इत्तर ॥ अणंग वीवाह तिव  
 अणुरागे ॥ चउथ वयस्स इआरे ॥ पडिक्कमे० ॥ १६ ॥  
 इत्तो अणुवएपं, चमंमि आयरिअ मप्पसत्तंमि ॥ परि  
 माण परिहेए ॥ इत्त पमाय प्पसंगेणं ॥ १७ ॥ धण  
 धन्न खित्त वडू ॥ रूपसुवन्नेअ कुविअ परिमाणे ॥ ड  
 पए चउप्पयंमि ॥ पडिक्कमे० ॥ १८ ॥ गमणस्सउ परि  
 माणे ॥ दिसासु उट्ठं अहेअ तिरिअंच ॥ बुद्धिसइ अंत  
 रद्धा ॥ पढमंमि गुणवए निंदे ॥ १९ ॥ मञ्जंमिअ मंसंमि  
 अ ॥ पुप्फेअ फलेअ गंधमत्तेअ ॥ उवजोगे परिजोगे ॥  
 बीअंमि गुणवए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते पडिबद्धे ॥ अपो  
 ल डुप्पोलिअंच आहारे ॥ तुहोसहि नस्कणया ॥ पडि०

॥ ११ ॥ इंगाली वण साडी ॥ जाडी फोडीसु वज्जए  
 कम्मं ॥ वाणिज्जं चेव दंतं ॥ लस्क रसं केस विस वि  
 सयं ॥ १२ ॥ एवं खु जंतपिन्नण ॥ कम्मं निह्वंठणंच द  
 वदाणं ॥ सर दह तलाव सोसं ॥ असई पोसंच वज्जि  
 ज्जा ॥ १३ ॥ सत्त गि मुसल जंतग ॥ तण कठे मंत मू  
 ल जेसज्जे ॥ दिन्ने दवाविएवा॥पडि० ॥ १४ ॥ न्हाणू  
 वट्टण वन्नग ॥ विलेवणे सद रुव रस गंधे ॥ वत्तासण  
 आनरणे ॥ पडि० ॥ १५ ॥ कंदपे कुकुइए ॥ मोहरि  
 अहिगरण जोग अइरित्ते ॥ दंमंमि अणछाए ॥ तइअं  
 मि गुणवए निंदे ॥ १६ ॥ तिविहे डु प्पणिहाणे ॥ अ  
 णवछाणे तहासइ विहूणे ॥ सामाइअ वितह कए ॥ प  
 ढमेसिस्कावए निंदे ॥ १७ ॥ आणवणे पेसवणे ॥ सदे  
 रूवेअ पुग्गलस्केवे ॥ देसावगासिअंमि ॥ बीए सिस्काव  
 ए निंदे ॥ १८ ॥ संथारुच्चारविही ॥ पमाय तहचेव जो  
 अणानोए ॥ पोसह विहि विवरीए ॥ तइए सिस्काव  
 ए निंदे ॥ १९ ॥ सच्चित्ते निस्किवणे ॥ पिहिणे ववएस  
 मच्चरे चेव ॥ कालाइकम्म दाणे ॥ चउथे सिस्कावए  
 निंदे ॥ २० ॥ सुहिएसुअ डुहिएसुअ ॥ जामे अस्संज  
 एसु अणुकंपा ॥ रागेणव दोसेणव ॥ तं निंदे तंच गरि  
 हामि ॥ २१ ॥ साहूसु संविनागो ॥ नकउ तव चरण

करणजुत्तेसु ॥ संते फासु अदाणे ॥ तं निंदे तंच गरिहा  
 मि ॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए ॥ जीविअ मरणेअ आ  
 सस पउगे ॥ पंचविहो अइआरो ॥ मा मळं दुळ मर  
 णंते ॥ ३३ ॥ काएण काइअस्स ॥ पडिक्कमे वाइअस्स  
 वायाए ॥ मणसा माणसिअस्स ॥ सवस्स वया इआर  
 स्स ॥ ३४ ॥ वंदणवय सिस्कागा, रवेसु सन्ना कसाय  
 दंमेसु ॥ गुत्तीसुअ समिईसुअ ॥ जो अइआरोअ तं निंदे  
 ॥ ३५ ॥ सम्मदिहीजीवो ॥ जइविहु पावं समायरे किं  
 चि ॥ अप्पोसि होइ बंधो ॥ जेण न निअंधसं कुणइ  
 ॥ ३६ ॥ तं पिहु सपडिक्कमणं ॥ स प्परिआवं सउत्तर  
 गुणंच ॥ खिण्णं उवसामेई ॥ वाहिं व सुसिखिउ विज्झो  
 ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुछगयं ॥ मंत मूल विसारया ॥  
 विज्झा हणंति मंतेहिं ॥ तो तं हवइ निविसं ॥ ३८ ॥  
 एवं अछविहं कम्मं ॥ राग दोससमज्झिअं ॥ आलोअं  
 तोअ निंदंतो ॥ खिण्णं हणइ सावउ ॥ ३९ ॥ कय  
 पावोवि मणुस्सो ॥ आलोइय निंदिअ गुरु सगासे ॥  
 होइ अइरेग लहुउ ॥ उ हरिअ जरुव नारवहो ॥ ४० ॥  
 आवस्स एण एए, ए सावउ जइवि बहुरउ होइ ॥  
 डस्काण मंत किरिअं ॥ काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥  
 आलोअणा बहुविहा ॥ नयसंजरिआ पडिक्कमणकाले ॥



( ३० )

मूलगुण उत्तरगुणे ॥ तंनिंदे तंचगरिहामि ॥ ४२ ॥ त  
स्स धम्मस्स केवलि॥पन्नत्तस्स अञ्जुत्तिमि॥ आराहणा  
ए ॥ विरत्तिमि विराहणाए ॥ तिविहेण पडिक्कतो ॥ वंदा  
मिजिणे चउवीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेईआई० ॥ ४४ ॥  
जावंत केविसाहू० ॥ ४५ ॥ चिर संचिय पावपणा,स  
णीइ नवसय सहस्स महणीए ॥ चउवीस जिण  
विणिगय, कहाईं वोलंतुमे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मं  
गल मरिहंता ॥ सिद्धा साहू सुअंच धम्मोअ ॥ सम्म  
द्विहीदेवा ॥ दिंतु समाहिंच बोहिंच ॥ ४७ ॥ पडिसि  
द्धाणं करणे॥किञ्चाण मकरणेअ पडिक्कमणं ॥ असदह  
णेअ तहा ॥ विवरीय परूवणाएअ ॥ ४८ ॥ स्वामेमि  
सव्व जीवेसु ॥ सव्वे जीवा खमंतुं मे॥मित्तीमे सव्वनूएसु॥  
वेरं मशं नकेणई ॥ ४९ ॥ एव महं आलोइअ ॥ निं  
दिअ गरहिअ दुगंठिअं सम्मं ॥ तिविहेण पडिक्कतो ॥  
वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ५० ॥ इति ॥ ३५ ॥

॥ अथ अङ्गुत्ति ॥

॥ इह्हा कारेण संदिसह नगवन् ॥ अजत्ति हं अग्निं  
तर देवसिअं ॥ स्वामेउ इहं स्वामेमि देवसिअं ॥ जंकिं  
चि अपत्तिअं परपत्तिअं ॥ नत्ते पाणे विणए वेआवच्चे ॥  
आलावे संलावे उच्चासणे ॥ समासणें अंतरजासाए ॥

उवरिनासाए जंकिंचि ॥ मस्र विणय परीहीणं ॥ सुढु  
मंवा बायरंवा, ॥ तुजे ज्ञाणह, अहं नयाणामि, ॥ त  
स्स मिह्वामि डुक्कडं ॥ इति ॥ ३६ ॥

॥ अथ आयरिअ उवप्पाए ॥

॥ आयरिअ उवप्पाए ॥ सीसे साहम्मिए कुजगणेअ ॥  
जेमे केइ कसाया ॥ सवे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ स  
वस्स समण संघ,स्स जगवउ अंजलिं करिअ सीसे ॥  
सवं खमावइत्ता ॥ खमामि सवस्स अहयंपि ॥ १ ॥ सव  
स्स जीव रासि,स्स जावउ धम्म निहिअ निअचित्तो ॥  
सवं खमावइत्ता ॥ खमामि सवस्स अहयंपि ॥ ३ ॥ इति ३ ७

॥ अथ नमोस्तु वर्द्धमानाय ॥

॥ इह्वामो अणुसंघिं ॥ नमो खमासमणाणं ॥ नमोहेतु ॥  
नमोस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा ॥ तज्झया वा  
स मोह्वाय, परोह्वाय कुतीर्थिनां ॥ १ ॥ येषां विकचा  
र विंदराज्या ॥ जायः क्रम कमलावलिं दधत्या ॥ सदृ  
शै रिति संगतं प्रशस्यं ॥ कथितं संतु शिवाय तेजिनेइः  
॥ २ ॥ कषायतापार्दित जंतु निर्वृतिं ॥ करो तियो जैन  
मुखांबुदोजतः ॥ सश्रुक्रमासोद्भववृष्टिसंनिजो ॥ द  
धातु तुष्टिं मयि विस्तरौ गिरां ॥ ३ ॥ इति ॥ ३७ ॥

( ११ )

॥ अथ विशाललोचन ॥

॥ विशाललोचनदलं ॥ प्रोद्यदंतांशुकेसरं ॥ प्रातः  
वीरजिनेंस्य ॥ मुखपद्म पुनातुवः ॥ १ ॥ येषामजिपे  
ककर्म कृत्वा ॥ मत्ता हर्षजरात् सुखं सुरेंद्राः ॥ तृणम  
पि गणयन्ति नैव नाकं ॥ प्रातः संतु शिवाय ते जिनेंद्राः  
॥ २ ॥ कलंकनिर्मुक्तममुक्तपूर्णातं ॥ कुतर्करादुग्रस  
नं सदोदयं ॥ अपूर्वं चंद्रं जिनचंद्रनापितं ॥ दिनागमे  
नौमि बुधैर्नमस्कृतं ॥ ३ ॥ इति ॥ ३९ ॥

॥ अथ श्रुतदेव क्षेत्रदेवस्तुति ॥

॥ सुअदेवयाए करेमि काउस्सगं ॥ सुअ देवया न  
गवई ॥ नाणावरणीअ कम्म संघायं ॥ तेसिं खवेउ स  
ययं ॥ जेसिं सुअ सायरे नत्ती ॥ १ ॥ इति ॥ ४० ॥

॥ अथ खित्तदेवयाए ॥ करेमि ॥

॥ जीसेखित्ते साहू ॥ दंसण नाणेहिं चरण सहिएहिं ॥  
साहंति मुक्कमगं ॥ सादेवी हरउ डुरि आइं ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ कमल दलस्तुति ॥

॥ कमलदलविपुलनयना ॥ कमलमुखी कमलगर्जसमगौ  
री ॥ कमले स्थिता जगवती ॥ ददातु श्रुतदेवतासिद्धिं ॥ इति

॥ अथ अट्ठाइंजेसु मुनिवंदन ॥

॥ अट्ठाइंजेसु दीव समुदेसु ॥ पन्नरससु कम्म जूमि

( १३ )

सु ॥ जावंत केविसाहू ॥ रयहरण गुह्य पडिगह धारा ॥  
पंचमहवयधारा ॥ अछारस सहस्स सीलंगधारा ॥ अस्क  
या यारचरित्ता ॥ तेसंवे सिरसा मणसा ॥ मढएण  
वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥ ४३ ॥

॥ अथ वरकनक ॥

॥ वरकनक शंख विद्रुम, मरकत धन संनिजं विगतमो  
हं ॥ सप्तति शतं जिनानां ॥ सर्वांमर पूजितं वंदे ॥ १ ॥

॥ अथ लघुशांतिस्तव ॥

॥ शांतिं शांतिं निशांतं ॥ शांतिं शांता शिवं नमस्कृ  
त्य ॥ स्तोतुः शांति निमित्तं ॥ मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥ १ ॥  
उमिति निश्चित वचसे ॥ नमो नमो जगवते ऽर्हते पू  
जां ॥ शांतिजिनाय जयवते ॥ यशस्विने स्वामिने दमि  
नां ॥ २ ॥ सकलातिशेपक महा, संपत्ति समन्वितायश  
स्याय ॥ त्रैलोक्य पूजिताय च ॥ नमो नमः शांतिदेवाय  
॥ ३ ॥ सर्वांमर सु समूह, स्वामिक सं पूजिताय निजि  
ताय ॥ सुवनजनपालनोद्यत, तमाय सततं नमस्त  
स्मै ॥ ४ ॥ सर्वदुरितौघनाशन, कराय सर्वाशिवप्र  
शमनाय ॥ दुष्टग्रहनूतपिशाच, शाकिनीनां प्रमथ  
नाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाममंत्रप्रधानवाक्योपयोगक  
ततोपा ॥ विजया कुरुते जनहित, मिति च नुता न

मततं शांतिं ॥ ६ ॥ नवतु नमस्तु नगवति ॥ विजयेसु  
 जये परापरैरजिते ॥ अपराजिते जगत्यां ॥ जयतीति  
 जयावहे नवति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि च संघ,स्य नऽकल्या  
 णमंगजंप्रददे ॥ साधूनां च सदाशिव, तुष्टिपुष्टिप्रदे  
 जीयाः ॥ ८ ॥ नव्यानां कृतसिद्धे ॥ निर्वृतिनिर्वाण  
 जननि सत्वानां ॥ अजयप्रदाननिरते ॥ नमोस्तु स्वस्ति  
 प्रदे तुभ्यं ॥ ९ ॥ नक्तानां जंतूनां ॥ गुणावहे नित्यमुद्य  
 ते देवि ॥ सम्यग्दृष्टीनां धृति, रति मतिबुद्धिप्रदाना  
 य ॥ १० ॥ जिनशासननिरतानां ॥ शांतिनतानां च ज  
 गति जनतानां ॥ श्रीसंपत्कीर्तियशो, वर्द्धनि जयदेवि  
 विजयस्व ॥ ११ ॥ सज्जिज्ञा ऽनलविषविषधर, दुष्टग्र  
 हराजरोरणजयतः ॥ राक्षसरिपुगणमारी, चौ  
 रेति श्वापदादिभ्यः ॥ १२ ॥ अथ रक्षरक्ष सुशिवं ॥ कुरु  
 कुरु शांतिं च कुरुकुरु सदेति ॥ तुष्टिं कुरुकुरु पुष्टिं ॥  
 कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरुकुरु त्वं ॥ १३ ॥ नगवति गुण  
 वति शिवशांति ॥ तुष्टि पुष्टि स्वस्तीह कुरुकुरु जनानां  
 उमिति नमोनमो ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीः यः कः ह्रीं फुट् फुट्  
 स्वाहा ॥ १४ ॥ एवं य न्नामाक्षर ॥ पुरःसरं संस्तुता  
 जयादेवी ॥ कुरुते शांतिं नमतां ॥ नमो नमः शांतये  
 तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरिदर्शित मंत्रपदविदर्न

तः स्तवः शांतेः ॥ सलिजादिजयविनाशी ॥ शांत्यादि  
 करश्च नक्तिमतां ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठतिसदा ॥ शृणो  
 ति नावयति वा यथायोग्यं ॥ सहिशांतिपदं यायात् ॥  
 सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ उपसर्गाः कृत्यं यांति ॥  
 विद्यंते विघ्नवद्वयः ॥ मनः प्रसन्नता मेति ॥ पूज्य  
 माने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमंगलमांगद्वयं ॥ सर्व  
 कल्याणकारणं ॥ प्रधानं सर्वधर्माणं ॥ जैनं जयति शास  
 नं ॥ १९ ॥ इति ॥ ४५ ॥

॥ अथ चउक्कसाय ॥

॥ चउक्कसाय पडिमन्नु छरणु ॥ डुळ्ळय मयण वा  
 ण मुसुमूरणुं ॥ सरस पिअंगु वन्न गयगामिउ ॥ ज  
 यउ पासु जुवणत्तयसामिउ ॥ १ ॥ जसुतणु कंति  
 कडप्पसिणि-इउ ॥ सोहइ फण मणि किरणानि-इउ  
 निन्नव जलहर तडिद्वय लंठिउ ॥ सोजिणु पासु पय  
 ष्ठउ वंठिउ ॥ २ ॥ इति ॥ ४६ ॥

॥ अथ नरहेसरनी सङ्काय ॥

॥ नरहेसर बाहुबली ॥ अनयकुमारोअ ढंढणकुमा  
 रो ॥ सिरिउ अणियाउत्तो ॥ अइमुत्तो नागदत्तोअ ॥ १ ॥  
 मेअङ्क थूलिजहो ॥ वयररिसि नंदिसेण सीहगिरी ॥  
 कयवन्नोअ सुकोसल ॥ पुंमरिउ केसि करकंफु ॥ २ ॥

हृदय विहृदय सुदंसण ॥ साल माहासाल सालिनदोअ,  
 नदो दसन्ननदो ॥ पसन्नचंदोअ जसन्नदो ॥ ३ ॥ जंबु  
 पद्म वंकचूजो ॥ गयसुकुमालो अवंतिसुकुमालो ॥ ध  
 न्नो इजाइपुत्तो ॥ चिजाइपुत्तोअ बाहुमुणी ॥ ४ ॥ अ  
 ऊगिरि अऊरस्किअ ॥ अऊसुहृदी उदायगो मणगो॥  
 कालयसूरी संबो ॥ पऊन्नो मूजदेवोअ ॥ ५ ॥ पन  
 वो विन्दु कुमारो ॥ अदकुमारो दढप्पहारीअ ॥ सिऊं  
 स कूरगडूअ ॥ सिऊंनवमेहकुमारोअ ॥ ६ ॥ एमाइ  
 महासत्ता ॥ दिंतु सुहं गुण गुणेहिं संजुत्ता ॥ जेसिं  
 नामग्गहणे ॥ पावय बंधा विलय ऊंति ॥ ७ ॥ सुज  
 सा चंदनबाला ॥ मणोरमा मयणरेह दमयंती ॥ नम  
 या सुंदरि सोया ॥ नंदा नदा सुनदाय ॥ ८ ॥ राय  
 मइ रिसीदत्ता ॥ पउमावइ अंजणा सिरीदेवी ॥ जिठ  
 सुजिठ मिगावइ, पनावई चिह्णणा देवी ॥ ९ ॥ बंजी  
 सुंदरि रूपिणि ॥ रेवइ कुंती सिवा जयंतीय ॥ देवइ  
 दोवइ धारणि ॥ कलावई पुप्फचूजाय ॥ १० ॥ पउमा  
 वईय गोरी ॥ गंधारी लखमणा सुसीमाय ॥ जंबुवइ  
 सच्चनामा ॥ रूपिणि कन्हठ महिसीउ ॥ ११ ॥ ज  
 र्काय जरकदिन्ना ॥ नूआ तहचेव नूअदिन्नाय ॥ से  
 णा वेणा रेणा ॥ नयणीउ शूलिनदस्स ॥ १२ ॥

इच्चाइ महासइउ ॥ जयंति अकलंक सीज कलिआउ ॥  
 अक्कवि वक्कइ जासिं, जस पडहो तिहुअणे सयले ॥  
 ॥ १३ ॥ इति सत्ता सत्तीउनी सञ्जाय ॥ ४७ ॥

॥ अथ ॥ मन्हजिणाण सञ्जाय ॥

॥ मन्हजिणाणं आणं ॥ मिच्चं परिहरह धर समत्तं ॥  
 ठव्विह आवसयंमि ॥ उक्कुत्तोहोइ पइ दिवसं ॥ १ ॥  
 पव्वेसु पोसहवयं ॥ दाणं सीजं तवो जावोअ ॥ सञ्जा  
 य नमुक्कारो ॥ परोवयारोअ जयणाअ ॥ २ ॥ जिण  
 पूआ जिणयुणणं ॥ गुरुयुअ साहम्मिआणवड्डहं ॥ वव  
 हारस्सय सुदि ॥ रहक्कुता तिड्डक्कुत्ताय ॥ ३ ॥ उव  
 सम विवेक संवर ॥ जासासमिई ठजाव करुणाय ॥ ध  
 म्मिअजण संसग्गो ॥ करणदमो चरिण परिणामो  
 ॥ ४ ॥ संघोवरि बहुमाणो ॥ पुब्बय लिहणं पजावणा  
 तिठे ॥ सट्ठाण किच्च मेअं ॥ निच्चं सुगुरुवएसेण ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ पोसहनुं पञ्चस्काण ॥

॥ करेमि जंते पोसहं ॥ आहारपोसहं देसउ सव्व  
 उं सरीर सक्कार पोसहं सव्वउ ॥ बंजचेर पोसहं सव्वउ ॥  
 अवावार पोसहं सव्वउ ॥ चउविहे पोसेहींगमि ॥ जा  
 व दिवसं अहोरत्तं पक्कुवसामि ॥ दुविहं तिविहेणं ॥ मणे  
 णं वायाए काएणं न करेमि नकारवेमि ॥ तस्सजंते पडिक्क



मामि ॥ निंदामि गरिहामि ॥ अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

॥ अथ पोसह पारता गाथा ॥

॥ सागरचंदोकामो, चंदवामिसो सुदंसणो धन्नो ॥ जेसिं  
पोसह पडिमा ॥ अखंमिआ जीविअंतेवि ॥ १ ॥ ध  
न्ना सलाहणिक्का ॥ सुलसा आणंद कामदेवाय ॥ जे  
सिं पसंसइ नयवं ॥ दढवयंतो महावीरो ॥ २ ॥ पोस  
ह विधिं लीयउ ॥ विधिं पारिउ विधि करतां ॥ जिको  
इ अविधि दुउ दुए ॥ तेसविहुं मन वचन कायाइं क  
री ॥ मिहामि डुक्कडं ॥ ॥ इति ॥ ५० ॥

॥ अथ तीर्थ वंदना ॥

॥ सकल तीर्थ वंडुं करजोड्य ॥ जिनवरनामें मंगल  
कोड्य ॥ पहेले स्वर्गे लाख बत्रीश ॥ जिनवर चईत  
नमुं निसदिस ॥ १ ॥ बीजे लाख अठाविश कह्यां ॥  
त्रीजे बारलाख सदह्यां ॥ चोथे स्वर्गे अडलख धार ॥  
पांचमे वंडुं लाखज चार ॥ २ ॥ ठठे स्वर्गे सहसपचास  
सातमे चात्रिस सहस प्रासाद ॥ आठमे स्वर्गे ठ हजा  
र ॥ नव दसमे वंडुं सतचार ॥ ३ ॥ अग्यार बारमे  
त्रणसें सार ॥ नवग्रैवेकें त्रणसें अठार ॥ पांचअनुत्तर  
सर्वेमली ॥ लाखचोरासि अधिकांवली ॥ ४ ॥ सहस  
सत्ताणु त्रेवीश सार ॥ जिनवर जुवन तणो अधिकार ॥

( ३९ )

लांबां सोयोजन विस्तार ॥ पंचास उंचां बहोतेर धार ॥  
॥ ५ ॥ एकसो एंसि बिंब प्रमाण ॥ सनासहित एकचै  
त्यें जाण ॥ सोकोड बावनकोड संजाल ॥ लाख चोरा  
णु सहस चौथाल ॥ ६ ॥ सातसें उपर साठविसाल ॥  
सविबिंब प्रणमुं त्रणकाल ॥ सातकोडनें बोहतरला  
ख ॥ नूवनपतिमां देवलनाख ॥ ७ ॥ एकसोएंसि बिं  
ब प्रमाण ॥ एक एक चैत्यें संख्याजाण ॥ तेरसेंकोड  
नव्यासिकोड ॥ साठलाख वंडुं करजोड ॥ ८ ॥ बत्रीसें  
ने उंगणसाठ, त्रीढालोकमां चैत्यनो पाठ ॥ त्रणलाख  
एकाणुंहजार ॥ त्रणसें वीशतें बिंब जुहार ॥ ९ ॥ व्यं  
तरज्योतिषिमां वलिजेह ॥ सास्वताजिन वंडुंतेह ॥ रुष  
न चंडानन वारिषेण ॥ वर्द्धमान नामे गुण सेण ॥ १० ॥  
समेतसिखर वंडुं जिन वीश ॥ अष्टापदवंडुं चोवीश ॥ वि  
मलाचलने घढगिरनार ॥ आबूउपर जिनवर जूहार ॥  
॥ ११ ॥ संखेश्वर केशरीयो सार ॥ तारंगे श्रीअजित  
जुहार ॥ अंतरीक वरकाणोपास ॥ जिरावलोने थंन  
णपास ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर पाटणजेह ॥ जिनवरचै  
त्य नमुं गुणगेह ॥ वेहेरमान वंडुं जिनवीश ॥ सिद्धअनं  
त नमुं निसदीस ॥ १३ ॥ अढीढीपमां जे अणगार ॥  
अढारसहस सिलांगनाधार ॥ पंच महावृत सुमतिसार

( ३० )

पाले पलावे पंचाचार ॥ १४ ॥ बाह्य अन्तर तप उ  
जमाल ॥ ते मुनि वंडुं गुण मणिमाल ॥ नीतनीतउठी  
किरतिकरूं ॥ जीव कहे नवसायरतरूं ॥ १५ ॥ इति  
॥ अथ श्रीमहावीरजिन ठंद ॥

॥ सेवो वीरने चितमां नीत्यधारो ॥ अरिक्रोधने मन्न  
थी दूरवारो ॥ सुसंतोषवृत्ति धरो चित्तमांहिं ॥ राग द्वेष  
थी दूरथाउठगांहिं ॥ १ ॥ पडद्यामोदना पासमांजेह  
प्राणी ॥ सुख तत्त्वनी वात तेणे न जाणी ॥ मनु जन्म  
पामी वृथा कां गमोठो ॥ जैनमार्ग ठंदी जुलाकां नमो  
ठो ॥ २ ॥ अलोनी अमानी निरागी तजोठो ॥ सलो  
नी समानी सरागी नजोठो ॥ हरी हरादि अन्यथी शुं  
रमोठो ॥ नदी गंग मूकी गलीमांपडोठो ॥ ३ ॥ केईदेव  
हाथे असी चक्रधारा ॥ केईदेव घालेगले रुंममाला ॥ के  
ईदेव उठगे राखेठ वामा ॥ केईदेवसाथेरमें वृंद रामा ॥  
॥ ४ ॥ केईदेव जप्पे लेई जप्पमाला ॥ केई मांसनह्नी म  
हा वीकराला ॥ केई योगणी नोगणी नोगरागे ॥ केईरु  
इणी ढागनो होममागे ॥ ५ ॥ ईस्या देवदेवीतणी आ  
श राखे ॥ तदा मुक्तिनां सुखते केमचाखे ॥ जदा लोचना  
थोकनो पारनाव्यो ॥ तदा मदनो बिंडुउ मनजाव्यो ॥ ६ ॥  
जेह देवलां आपणी आशराखे ॥ तेहपिंमने मन सृजे

अचाखे ॥ दिन्न हिन्ननी नीडते केम नाजे ॥ फुटो ढोलहो  
 ए कहोकेम वाजे ॥ ७ ॥ अरे मूढ चाता नजो मोहदा  
 ता ॥ अलोनीप्रचूने नजोविश्वख्याता ॥ चिंतामणी सा  
 रिखो एहसाचो ॥ कलंकीकाचना पिंमसुंमत राचो ॥ ८ ॥  
 मंदबुद्धिसुं जेह प्राणी कहेढे ॥ सवीधर्म एकत्व नूलोन  
 मेढे ॥ किहां सर्पपाने किहां मेरुधीरं ॥ किहां कायराने कि  
 हांशूरवीरं ॥ ९ ॥ किहां स्वर्णथालं किहां कुंजखंमं ॥ कि  
 हां कोडवाने किहां खीर मंमं ॥ किहां खीरसिंधू किहां  
 खारनीरं ॥ किहां कामधेनू किहां ढाग खीरं ॥ १० ॥  
 किहां सत्यवाचा किहां कूडवाणी ॥ किहां रंकनारी  
 किहां रायराणी ॥ किहां नारकीने किहां देव नोगी ॥ किहां  
 इंद्रदेही किहां कुष्ठरोगी ॥ ११ ॥ किहां कर्मघाती किहां ध  
 र्मधारी ॥ नमो वीरस्वामी तजो अन्यवारी ॥ जिसी सेजमां  
 स्वप्नथी राज्यपामी ॥ राचेंमंदबुद्धि धरी जेह स्वामी ॥ १२ ॥  
 अथीरसुख संसारमां मन्नमाचें ॥ ते जना मुढमां श्रेष्ठ  
 सुंष्टगजे ॥ तजो मोहमाया हरो दंनरोसी ॥ सजो पु  
 न्यपोसी नजो ते अरोसी ॥ १३ ॥ गतीचार संसार  
 अपारपामी ॥ आव्या आशधारी प्रनुपायस्वामी ॥ तुंही  
 तुंही तुंही प्रचू पर्मेरागी ॥ नवफेरनी श्रृंखला मोह ना  
 गी ॥ १४ ॥ मानीए वीरजी अर्जढे एक मोरी ॥ दीजे

( ३१ )

दासकुं सेवना चर्णतोरी ॥ पुन्य उदय हुउं गुरु आज  
मेरो ॥ विवेके लह्योमें प्रभुदर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति ५१

॥ अथ गणधरस्तवलिख्यते ॥

॥ एकदश गणधरनां नाम ॥ प्रहउठीनें करू प्रणाम ॥  
इंद्रचुती पहेलोते जाण ॥ अग्निचुती बीजो गुणखाण ॥  
॥ १ ॥ वायुचुती त्रीजो जगसार ॥ गणधर चोथो व्य  
क्त उदार ॥ सासनपती सुधर्मासार ॥ मंढितनामे ठगो  
धार ॥ २ ॥ मौर्यपूत्रते सातमो जेह ॥ अकंपीत अष्ट  
म गुणगेह ॥ सुनिवरमांहेजे प्रधान ॥ अचलच्रात न  
वमोए नाम ॥ ३ ॥ नामथकि होय कोडी कव्याण ॥  
दशमो मेतारज अविरलवाण ॥ एकादशमो प्रनास क  
हेवाय ॥ सुखसंपति जस नामे थाय ॥ ४ ॥ गाया  
वीरतणा गणधार ॥ गुणमणिरयणतणा चंमार ॥ उत्तम  
विजयगुरुनो सीस ॥ रत्नविजय वंदे निसदिश ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सीमंधरजिनचैत्यवंदन ॥

॥ श्रीसीमंधर वीतराग, त्रीभुवन उपगारी ॥ श्री  
श्रेयांस पिताकुले, बहुशोना तुमारी ॥ १ ॥ धन्यध  
न्य माता सत्यकी, जेणे जायो जयकारी ॥ वृषनलंठने  
बिराजमान, वंदे नर नारी ॥ २ ॥ धनुष पांचसे देहडी

( ३३ )

ए, सोहीए सोवन वान ॥ कीर्त्तिविजय उवजायनो,  
विनय धरे तुमध्यान ॥ ३ ॥ इति० ॥ ५४ ॥

॥ अथ श्री सीमंधरजिन स्तवन ॥

॥ पुरकलवइ विजयें जयोरे, नयरी पुंमरीगिणी सार ॥  
श्रीसीमंधर साहेबारे, रायश्रेयांस कुमार ॥ जिणंदरा  
य ॥ धरज्यो धर्म सनेह ॥ १ ॥ एआंकणी ॥ मोटान्हाना  
अंतरोरे, गिरुआ नवि दाखंत ॥ शशि दरिसण सायर व  
धेरे, कैरव वन विकसंत ॥ जि० ॥ २ ॥ ठाम कुठाम  
न लेखवेरे, जग वरसंत जलधार ॥ कर दोय कुसुमें वा  
सिऐरे, ठाया सविआधार ॥ जि० ॥ ३ ॥ राय रंक  
सरिखा गणोरे, उद्योते शशि सूर ॥ गंगाजल ते बिहुंत  
णारे, ताप करे सवीदूर ॥ जि० ॥ ४ ॥ सरिखा सहुने  
तारवारे ॥ तिम तुमेठो महाराज ॥ मुजसुं अंतर किम  
करोरे, बांहे ग्रह्यानी लाज ॥ जि० ॥ ५ ॥ मुख दे  
खी टीजुं करेरे, ते नवि होय प्रमाण ॥ मुजरो माने  
सवितणोरे, साहिब तेह सुजाण ॥ जि० ॥ ६ ॥ वृषन  
लंढन माता सत्यकीरे, नंदन रुकमणी कंत ॥ वाच  
कजस एम वीनवेरे, जय जंजन जगवंत ॥ जि० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सीमंधरजिन थोय ॥

॥ श्रीसीमंधर जिनवर ॥ सुखकर साहेबदेव ॥ अरि

( ३४ )

हंत सकलनी ॥ जावधरी करुं सेव ॥ सकल आगम पा  
रक ॥ गणधर जाखीत वाणि ॥ जयवंती आणा ॥ झा  
नविमल गुणखाणि ॥ १ ॥ इति ॥ ५६ ॥

॥ अथ सिद्धाचलजीनुं चैत्यतवंदन ॥

॥ श्रीशत्रुंजय सिद्धखेत्र ॥ दीठे दुरगतिवारे ॥ जाव  
धरीने जेचढे ॥ तेने नव पार उतारे ॥ १ ॥ अनंत सि  
द्धनुं एहगाम ॥ सकल तीरथनो राय ॥ पुरव नवाणुं  
रुषनदेव ॥ ज्यां ठविआ प्रनुपाय ॥ २ ॥ सुरजकुंम  
सोहामणो ॥ कवड जहू अनिराम ॥ नाजीराया कुल मं  
रणो ॥ जिनवर करुं प्रणाम ॥ ३ ॥ इति ॥ ५७ ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥

॥ विमलाचल नितु वंदिये ॥ कीजे एहनीसेवा ॥ मा  
नुं हाथ ए धर्मनो ॥ शिव तरु फल लेवा ॥ वि० ॥ १ ॥  
उल्लल जिनगृह मंमली ॥ तिहां दीपे उत्तंगा ॥ मानुं  
हिमगिरी विच्रमे ॥ आइ अंबर गंगा ॥ वि० ॥ २ ॥ को  
ई अनेरो जगनर्हा ॥ एह तीरथ तोले ॥ एम श्रीमुख हरी  
आगले ॥ श्रीसीमंधर बोले ॥ वि० ॥ ३ ॥ जे सघलां  
तीरथ कखां ॥ जात्रा फल कहीए ॥ तेहथीए गिरी नेटतां  
॥ सत्तगणुं फल लहीएं ॥ वि० ॥ ४ ॥ जनम सफल  
होय तेहनो ॥ जेह एगिरि वंदे ॥ सुजसविजय संपद

लहे, ते नर चिर नंदे ॥ वि० ॥ ५ ॥ इति ॥ ५८ ॥

॥ अथः श्रीसिद्धाचलजीनी योय ॥

॥ पुंनरगिरी महीमा ॥ आगममां परसिद्ध ॥ विम  
लाचल जेटी ॥ लहीए अविचल रुद्ध ॥ पंचमीगति  
पोहोता ॥ मुनिवर कोडाकोड ॥ इणें तीरथे आवी ॥  
कर्म विपातक ठोड ॥ १ ॥ इति ॥ ५९ ॥

॥ अथ सामायकलेवानोविधी ॥

॥ प्रथम उंचें आसनें पुस्तकप्रमुख मुकीनें श्राव  
क श्राविका कटासणुं मुहपति चवलो लेइ, शुद्ध व  
स्त्र जग्या पुंजी, कटासण उपर बैसी, मुहपति माबा  
हाथमां मुखपासें राखी, जमणो हाथ थापनाजी स  
नमुख राखी एक नवकार गणि पंचिंदिअ कही, इहामि  
खमासमण देइ इरियावहिया, तस्सउत्तरी, अन्नहउस  
सएणं कही, एक लोगस्सनो अथवा चार नवकारनो  
काउस्सगग करी, पारी, प्रगट लोगस्सकही, खमासमण  
देइ, इह्वाकारेण संदिसह जगवन्, सामायक मुहपति  
पडिलेउं इहं एमकहि मुहपति अंगनी पडिलेहण ना  
पचास बोलकही, मुहपति पडिलेहीएं. खमासमणदेइ  
इह्वाकारेण संदिसह जगवन् सामायक संदिसाहुं इहं वजी  
खमासमणदेइ, इह्वा० सामायक ठाउं, इहं एमकहि



( ३६ )

बे हाथ जोड़ी एक नवकार गणी, इहकारी जगवन, पसा  
यकरी सामायक मंमक उच्चरावोजी. वडिल करेमिनंते  
कहे. पढी खमासमणदेइ इह्वा० बेसणे संदिसाहुं  
॥ खमा० ॥ इह्वा० ॥ बेसणे ठाउं. खमा० ॥ इह्वा० ॥  
सजाय संदिसाहुं ॥ खमा० ॥ इह्वा० ॥ सजायकरुं इह्वा० ॥  
एमकहि त्रण नवकार गणवा, पढी बेघडी सजाय धर्म  
भ्यान करवुं ॥ इति सामायक लेवानो विधिसमाप्तम्. ॥

॥ अथ सामायक पारवानो विधि ॥

॥ खमासमणदेइ इरियावहि पडिक्कमाथी जावत्  
लोगस्ससुधी कही खमा० ॥ इह्वा० ॥ मुहपति पडि  
लेहुं कही, मुहपति पडिलेहि, खमासमणदेइ, इह्वा० ॥  
सामायक पारुं: यथासक्ति वली खमासमणदेइ, इह्वा० ॥  
सामायक पायुं; तहत्ती कही, पढी जमणोहाथ चवला  
उपर अथवा कटासणाउपर थापी, एक नवकार ग  
णी सामाइय वयजुत्तो कहियें. पढी जमणो हाथ थाप  
ना सन्मुख सवलो राखी ने एक नवकार गणीयें. ॥ इति

॥ अथ पडिलेहण करवानो विधि ॥

॥ नवकार पंचिंदिय कही इरिया वहियाए स्थाप  
ना होय तो नवकार पंचिंदिय न कहेवुं. पढी तस्सुत्तरी  
कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सगकरी

प्रगट लोगस्स कही उजे पगें बेसी. मुहपति, कटासणु, च बलो, उत्तरासण, धोतीउं, कंदोरो आदे पडिलेहवां, पढी का जो काहाडी जीव कलेवर सचित आदे जोबुं. पढी काजो काहाडनार थापनाजी सन्मुख उजो रही इरियावहि प डिकमे, पढी काजो परठववा जग्या सोधि त्रण वार अणु जाणह जस्सग्गो कही काजो परठवे, पढी त्रण वार वोसिरे कहे. इति पडिलेहण करवानो विधि ॥ ६१ ॥

॥ अथ देव वांदवानो विधि ॥

॥ प्रथम इरियावहि पडिकमवाथी मांमीने जावत् लो गस्स कही, पढी उत्तरासण नांखीने चैत्यवंदन नमुबुणं कही जयवीअराय आ नव मखंमासुधी अर्छो कहे, व ली बीजुं चैत्यवंदन करी, नमुबुणं कही जावत् चार थो थो कहीये. वली नमुबुणं कही थावत् बीजी चार थोयो कहीए त्यांसुधी बधुं केहेबुं, पढी नमुबुणं तथा बे जा वंतीकही. एटले जावंति चेइआइं तथा जावंत केवि साहु ए बे कही उवसग्गहरं अथवा स्तवनकही, अर्छो जय वीअराय आनव मखंमासुधि कही, पढी चैत्यवंदन कही नमुबुणं कही संपूर्ण जय वीअराय केहेवा. प्र जाते देववांदवा तेहमां मन्हजिणाणंनी सजाय केहेवी, मध्यान्हे तथा सांजे देव वांदे तेहमां सजाय नकहे॥इति॥

॥ अथ देवसि प्रतिक्रमण विधी प्रारंभः ॥

॥ प्रथम सामायक लिजे. पढी पाणी वावखुं होयतो सु  
हपती पडिजेहेवी, अने आहार वावखो होयतो वांदणां  
वे देवां, त्यां बीजा वांदणामां आवसीआए ए पाठ नके  
हेवो. यथा शक्ति पञ्चस्काण करवुं. खमासमण देइ  
इष्ठाकारेण कही, वडेरा अथवा पोते चैत्य वंदन कहिने  
पढी जिंकेंचिं नमुबुणं कही, उजा अर्शने अरिहंतचेईया  
णं कहिने एक नवकारनो काउस्सग्न करी नमोऽर्हत०  
कहिने प्रथम थोय केहेवी. पढी लोगस्स, सबलोए,  
अरिहंतचेईयाणं कहिने एक नवकारनो काउस्सग्न पारी  
ने बीजी थोय केहेवी. पढी पुस्करवरदी कही, सुअस्स  
जगवउं करेमि काउसग्न वंदण० एक नवकारनो काउस  
ग्न पारी त्रीजी थोय केहेवी. पढी सिद्धाणं बुद्धाणं कही  
वेयावच्च गराणं० करेमि काउसग्नं अनद्ध० ॥ पढी एक  
नवकारनो काउसग्नपारी, नमोऽर्हत० कही, चोथी  
थोय केहेवी. पढी बेसीने नमुबुणं केहेवुं. पढी चार  
खमासमण देवा पुर्वक जगवान् आचार्य उपाध्याय सर्व  
साधुन्यः प्रत्ये वंदन करीये. पढी इष्ठाकारेण० ॥ देवसि  
प्रतिक्रमणे ठाउं एमकहि जमणोहाथ चवला कटासणा  
उपर थापीनें इहं सबसवी देवसिअ० केहेवुं. पढी उ

( ३९ )

जायइ करेमिजंते इहामि ठामि काउसग्गं जोमें देव  
सिउं तस्सउत्तरी० कही. पढी आठ गाथानो काउसग्ग  
करवो ॥ आठ गाथा न आवडे तो आठ नवकारनो का  
उसग्ग करवो ते पारीने, पढी लोग्गस कहेवो ॥ बेसीने  
त्रीजा आवश्यकनी मुहपती पडिलेहीने वांदणा बे दे  
वां. पढी उजा यइने इहामि० देवसिअं आलोउं इहं  
आलोएमि जोमेदेवसिउं कहीने. पढी सातलाख कहे  
वा. पढी अठार पापस्थानक आलोइने सबस्सबि देव  
सिअं कहीने बेसवुं. बेसीने एक नवकार गणी  
पढी करेमिजंते इहामि पडिक्कमिउं कहीने, वंदितु  
कहेवुं, पढी वांदणां बे देवां. पढी अप्पुठिउहं अप्पितर  
देवसिअं खामीने वांदणां बे देवां पढी उजायइ आ  
थरीय उवझाए कहीने करेमिजंते इहामि ठामि काउ  
सग्गं जोमें देवसिउं० तस्सउत्तरी० कही पढी बे लोग  
स्सनो अथवा आठ नवकारनो काउग्गपारीने पढी  
लोगस्स प्रगट कहेवो. पढी सबलोए, अरिहंतचेइयाणं,  
वंदणवत्तिआए कही, एकलोगस्स अथवा चार नवका  
रनो काउसग्ग पारीने, पुखरवरदी० सुअस्सजगवउं०  
करेमि० वंदण० एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो  
काउसग्ग पारीने, सिद्धाणं बुद्धाणं० कही सुअ देवयाए

करेमि काउसग्गं एक नवकारनो काउसग्ग पारी न  
मोऽर्हत० कही, पुरुषे सुअदेवयानी पेहेली थोय कहेवी  
अने स्त्रीये कमलदलनी पेहेली थोय कहेवी. पठी खे  
त्रदेवयाए करेमि काउसग्गं० एक नवकारनोकाउसग्ग  
पारी नमोऽर्हत० कही क्षेत्र देवयानी बीजी थोय स्त्रीये  
तथा पुरुषे बंने ने कहेवी. पठी प्रगट एक नवकार गणी  
बेसीने, ठठा आवश्यकनी मुहपती पडिलेही, बे  
वांदणां आपीए. पठी सामायक चउविसठो, वंदण, प  
डिक्कमणुं, काउसग्ग अने पच्चस्काण ए ठ आवश्यक सं  
चारवा. पठी इत्तामो अणुसार्हिं कही नमो खमासमणा  
एं कही नमोऽर्हत० कहीने पुरुष नमोस्तु वर्द्धमानाय  
कहे, अने स्त्री संसार दावानी त्रण गाथा कहे. पठी  
नमुबुणं कही स्तवन कहेवुं. पठी वरकनक कही जग  
वान् आदे वांदवा. पठी जमणो हाथ उपधी उपर था  
पी अट्ठाईजेसु कहेवुं. पठी देवसिअ पायञ्चित्तनो काउ  
स्सग्ग चार लोगस्सनो अथवा सोल नवकारनो करवो  
पठी ते काउस्सग पारी, प्रगट लोगस्स कही, बेसीने  
खमासमण बे देइ सञ्जायनो आदेश मागी, एक नवका  
र गणी सञ्जाय कहीए, पठी एक नवकार गणीए, पठी  
डुक्कखउं कम्मखउं नो काउसग्ग चार लोगस्सनो संपू

ए ऋथवा सोल नवकारनो करवो. एक वडेरे ऋथवा पोते पारीने नमोऽर्हत् कही लघुशांति कहेवी, पढी प्र गट लोगस्स कहेवो, पढी इरियावही कही तस्सउत्तरी एक लोगस्स ऋथवा चार नवकारनो काउस्सग करी प्रगट लोगस्स केहेवो. पढी चउकसाय कही, नमुब्बुणं, जावंति बे कही, उवसग्गहरं, जयवीयराय कही, मुह पति पडिलेहेवी. इहामि० ॥ इह्वाका० ॥ सामयक पारवुं यथाशक्ति इहामि० ॥ इह्वाका० सामायक पाखुं तहत्ति कही पढी जमणोहाथ उपधी उपर थापी एक नव कारगणीने सामाइअ वय जुत्तो कहेवो. पढी थापना होयतो एक नवकार गणी उठे. ॥ इति ॥ देवसिप्रति क्रमणविधी कही, बाकी अंतरविधी वडेराथी समजवी.

॥ अथ राइ प्रतिक्रमण विधी ॥

॥ प्रथम पूर्वनीरीते सामायकलीजे ॥ पढी कुसुमिण डुसुमिणनो काउस्सग चार लोगसनो ऋथवा सोल न वकारनो करी पारी प्रगट लोगस्स कहेवो, पढी खमास मणदेइ जगचिंतामणीनुं चैत्यवंदन जयवीयराय सुधी करवुं पढी चार खमासमण पूर्वक जगवान्, आचार्य, उपाध्याय सर्व साधु प्रत्ये वांदवा, खमासमण बे देइ सस्त्रायनो आदेश मागी एक नवकार गणीने जरहेसरनी

सञ्ज्ञाय कहीने फरी एक नवकार गणवो. पढी इह्माका  
र सुहराइनो पाठ केहेवो, पढी इह्माका० राइ प्रति  
क्रमणोठाउं कहीने जमणो हाथ उपधी उपर स्थापीने  
इह्मंसवसवी राइय डुचिंतीय० कही ॥ नमुबुणं करेमि  
जंते कही इह्मामि ठामि काउसग्गं० तस्सउत्तरी कही  
एक लोगस्स अथवा चार नवकार नो काउसग्ग पा  
रिने. प्रगट लोगस्स कही सबलोए० अरिहंत० कही  
एक लोगस्स अथवा चार नवकार नो काउसग्ग पारी  
पुरकरवरदी० सुअस्स० वंदण० कही अतिचारनी आठ  
गाथानो अथवा आठ नवकारनो काउसग्ग पारी, सि  
द्धाणं बुद्धाणं कहीने, त्रीजा आवश्यकनी मुहपति पडि  
लेही वांदणां बे देवां, त्यांथी ते अप्पुच्छिउं खामि वांदणां  
बे दीजे, त्यां सुद्धि देवसिनीरीते जाणवुं. पण जे ठामें  
देवसिअं आवेठे ते ठामे राइयं केहेवुं. पढी आयरिअ  
उवञ्जाए० करेमिजंते इह्मामि ठामि काउसग्गं तस्सउत्त  
री कही तप, चिंतामणि करतां न आवडेतो चार लोग  
स्सनो अथवा सोल नवकारनो काउसग्ग करवो, तेपारी  
प्रगट लोगस्स कही, पढी बछा आवश्यकनी मुहपती  
पडिलेहीने वांदणां बे देवां, ते पढी तीर्थवंदन करवुं,  
पढी यथाशक्तियें पञ्चस्काण करवुं, पढी इह्माकारेण संदि

सह जगवन् सामायक, चउविसब्बो, वंदण, पडिकमणु,  
 काउसग्ग अने पच्चस्काण ए आवश्यक संजारवा पच्चखाण  
 कखुं होयतो कखुं ठेजी कहेवुं, अने धाखुं होयतो  
 धाखुं ठेजी एम कहेवुं. पढी इत्तामोअणुसठिं नमोखमास  
 मणाणं नमोऽर्हत् पढी विशाललोचन नमुत्तुणं, अरि  
 हंतचेईयाणं एटला कहीने एक नवकारनो काउसग्ग  
 पारीनेनमोऽर्हत् कही कब्बाणकंदनी थोय प्रथमकहेवी.  
 लोगस्स, पुस्करवरदि, सिद्धाणंबुद्धाणं, कही अनुक्रमे चा  
 र थोयो कहीयें ठैए त्यांसुधी सर्व कहेवुं. पढी नमुत्तुणं  
 कही जगवान् आदि चार ने चार खमासमणे वांदवां.  
 पढी जमणोहाथ उपधी उपर थापी अट्ठाइक्केसु कहेवुं.  
 पढी श्री सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जय वीय  
 राय, काउसग्ग थोय पर्यंत करवुं. पढी खमासमण पुर्व  
 क श्री सिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीयराय,  
 काउसग्ग थोय सुधी करवुं ॥ पढी सामायक पारवाना  
 विधीनी रीते सामायक पारवा सुद्धी कहेवुं ॥ इति राइप्रति  
 क्रमण नो विधी समाप्त ॥ ६५ ॥

॥ अथ पच्चखाणपारवानो विधी ॥ ६६ ॥

॥ प्रथम इरियावहियाए पडिकमीयें जावत् जगचिं  
 तामणीनु चैत्यवंदन जयवीयराय सुधि करवुं. ॥



पठी मन्हजिणाणंणी सप्पायकही मुहपत्ति पडि ले  
हेवी. इत्तामी० इत्ताका० पच्चखाणपारुं, यथाशक्ति इत्ता  
मी० इत्ताका० पच्चस्काण पाखुं, तहत्ति एमकही जमणो  
हाथ कटासणा चवला उपर थापी एक नवकार गणी  
पच्चखाण कखुं होय ते कही पारवुं ॥ ते लखिए ठैए.

उग्गएसूरे नमुक्कारसहिअं पोरसिं साढपोरसिं गंत  
सहिअं मुवसहिअं पच्चस्काण कखुं चौविहार आंबिल  
नीवि एकासणु बेआसणु कखुं, तिविहार पच्चखाण  
फासिअं पान्निअं सोहिअं तीरिअं किट्ठिअं आरादिअं  
जंच न आराहिअं तस्समिच्चामि डुक्कडं ॥ इति ॥ ६६ ॥

॥ अथ प्रजातनां पच्चखाण ॥

॥ अथ नमुक्कारसहिअं मुवसहिअंनुं ॥

॥ उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं मुवसहिअं पच्चस्काइ  
चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नञ्ज  
णा जोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहि  
वत्तिया गारेणं वोसिरे ॥ इति ॥ ६७ ॥

॥ अथ पोरिसि साढपोरिसिनुं ॥ ६८ ॥

॥ उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पोरिसिं साढपोरिसिं  
मुच्छसहियं पच्चस्काइ उग्गएसूरे चउविहंपि आहारं अ  
सणं पाणं खाइमं साइमं अन्नञ्जणा जोगेणं सहस्सा

गारेण पञ्चन्नकालेणं दिसामोहेणं सादुवयणेणं महतरा  
गारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति ॥ ६८ ॥

॥ अथ सांज्जां पञ्चस्काण ॥ अथ चउविहारनुं ॥  
दवस चरिमं पञ्चस्काई चउविहंपि आहारं असणं पाणं  
खाइमं साइमं अन्नहणा नोगेणं सहस्सागारेणं महत्त  
रागारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति ॥ ६९ ॥

॥ अथ तिविहारनुं ॥ ७० ॥

॥ दिवस चरिमं पञ्चस्काई तिविहंपि आहारं अस  
णं खाइमं साइमं अन्नहणानोगेणं सहसागारेणं मह  
त्तरागारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति ॥ ७० ॥

॥ अथ डुविहारनुं ॥ ७१ ॥

॥ दिवसचरिमं पञ्चस्काइ डुविहंपि आहारं असणं  
खाइमं अन्नहणा नोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरा गारे  
णं सबसमाहि वत्तियागारेणं ॥ वोसिरे ॥ इति ॥ ७१ ॥

॥ अथ क्रोधनी सजाय ॥ ७२ ॥

॥ कडुवांफलजे क्रोधनां, झानी एम बोले ॥ रीसतणो  
रस जाणीये, हलाहलतोले ॥ क० ॥ १ ॥ क्रोधे क्रोडपूर  
वतणुं, संजम फल जाय ॥ क्रोधसहित तप जे करे, ते  
तो लेखे नथाय ॥ क० ॥ २ ॥ साधु घणो तपीयो दुतो,  
धरतो मन वैराग ॥ शीष्यना क्रोध थकी थयो, चंमको

सीयोनाग ॥ क० ॥ ३ ॥ आग उठेजे घर थकी, पहे  
 लुं ते घर बाले ॥ जलनो जोगजो नवि मले, तो पा  
 सेंनु परजाले ॥ क० ॥ ४ ॥ क्रोधतणी गति एहवी, क  
 हे केवलनाणी ॥ हाण्य करेजे हेतनी, जालवजो रे प्रा  
 णी ॥ क० ॥ ५ ॥ उदयरतन कहे क्रोधने, काढजो गले  
 सांही ॥ काया करजो निरमली, उपसमरस नाही ॥ क०

॥ अथः— माननी सजाय ॥

॥ रे जीव मानन कीजीए, माने विनय न आवेरे ॥  
 विनय विना विद्या नहीं, तो किम समकित पावेरे ॥  
 ॥ रे० ॥ १ ॥ समकित विण चारित्र नहीं, चारित्र वि  
 ण नहीं मुक्तिरे ॥ मुक्तिनां सुख ठे सास्वतां, ते केम  
 लहिए जुक्तिरे ॥ रे० ॥ २ ॥ विनय वडो संसारमां,  
 गुणमां अधिकारीरे ॥ माने गुण जाए गली, चित्त  
 जो जो विचारीरे ॥ रे० ॥ ३ ॥ मान कछुं जो राव  
 णो, ते तो रामें माखोरे ॥ डुर्योधन गरवें करी, अंते स  
 वि हाखोरे ॥ रे० ॥ ४ ॥ सुकां लाकडां सारिखो, डुख  
 दाइ ए खोटोरे ॥ उदय रत्न कहे मानने, देजो दे  
 श वटोरे ॥ रे० ॥ ५ ॥ इति ॥ ७३ ॥

॥ अथः— मायानी सजाय ॥

॥ समकितनुं मूल जाणीएजी, सत्य वचन साक्षात् ॥ सा

चामां समकित वसेजी, मायामां मिथ्यात्वरे ॥ प्राणी मक  
 रीश माया लगार ॥ १ ॥ ( टेक ) मुख मीठो जूठो म  
 नेजी, कुड कपटनोरे कोट ॥ जीजें तो जी जी करेजी,  
 चितमांहे ताके चोटरे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ आप गरजें आघो  
 पडेजी, पण न धरे विश्वास ॥ मेल न ठंमे मन तणोजी,  
 ए मायानो पासरे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ जेहशुं बांधे प्रीतडी  
 जी, तेहशुं रहे प्रतीकूल ॥ मयल न ठंमे मन तणोजी,  
 ए मायानुं मूलरे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ तप कीधुं माया क  
 रीजी, मित्रसुं राख्योरे नेद ॥ मल्ली जिनेश्वर जाणजो  
 जी, पाम्या स्त्री वेदरे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ उदय रत्न क  
 हे सांजलोजी, मेलो मायानी बुढ ॥ मुक्ति पुरी जावा त  
 णोजी, ए मारगठे सुढरे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥

॥ अथः श्री लोचनी सजाय ॥

॥ तुमें लक्ष्मण जो जो लोचनारे, लोचें जन पामे ह्योन  
 नारे ॥ लोचें माह्या मन मोह्या करेरे, लोचें डुरघट पं  
 थे संचरेरे ॥ तु० ॥ १ ॥ तजे लोच तेहनां लेउं जांमणां  
 रे, वली पाये नमी ने करुं खामणारे ॥ लोचें मरजादा  
 न रहे केहनारे, तुमें संगत मेलो तेहनारे ॥ तु० ॥ २ ॥  
 लोचें घर मेहेली रणमां मरेरे, लोचें उंच ते नीचुं आ  
 चरेरे ॥ लोचें पाप जणी पगळुं जरेरे, लोचें अकारज

करतां न उसरेरे ॥ तु० ॥ ३ ॥ लोर्जे मनडुं न रहे नि  
 रमलुंरे, लोर्जे सगपण नासे वेगलुंरे ॥ लोर्जे न रहे प्री  
 तने पावतुंरे, लोर्जे धनमेले बहु एकतुंरे ॥ तु० ॥ ४ ॥  
 लोर्जे पुंत्र प्रतें पिता हणेरें, लोर्जे हत्या पातीक नवि  
 गणेरें ॥ ते तो दाम तणे लोर्जे करीरे, उपर मणीध  
 र थाये ते मरीरे ॥ तु० ॥ ५ ॥ जोतां लोर्जनो थोन दि  
 से नहीरे, एवुं सूत्र सिद्धांते कहुं सहरीरे ॥ लोर्जे चक्री  
 संचुम नामे जुउरे, ते तो समुद् मांहे रुबी मुवोरे ॥  
 ॥ तु० ॥ ६ ॥ एम जाणीने लोर्ज ते ठंमजोरे, एक ध  
 र्मसुं ममता मंमजोरे ॥ कवी उदय रत्न नाषे मुदारे, वं  
 डु लोर्ज तजे तेहने सदारे ॥ तु० ॥ ७ ॥ इति श्री संपूर्ण॥

॥ अथः श्री पार्श्वनाथनी आरती ॥

॥ आरति कीर्जे पास कुंवरकी, जन्म मरण जय ह  
 र जिनवरकी ॥ नयरी वणारसी जन्म कहावे, वामा मा  
 त प्रनू दुलरावे ॥ आ० ॥ १ ॥ योवन वन फल जो  
 गि जणावे, नारि प्रजावतीसती परणावे ॥ काय निरो  
 ग जोग विलसावे, पुरिसा दाणी बिरुद धरावे ॥ आ० ॥  
 ॥ २ ॥ ज्ञान विलोकी कमठ हरावे, गहन दहनथी फ  
 णी निकसावे ॥ सेवक मुख नवकार सुणावे, धरणरा  
 य पदवी निपजावे ॥ आ० ॥ ३ ॥ क्रोधि कमठ हठ

( ४९ )

तप लय लावे, जिन दरशनज्ञें सुरगति पावे ॥ जोग सं  
योग वियोग बनावे, संयम श्री आतम परणावे॥आ०  
॥ ४ ॥ ध्यान लेहरियां काउसगगनावे, स्वामिकुं वडल  
य तव ठावे ॥ मेघ मालि जलधर वरसावे, जब नासा  
जर जर जल लावे ॥ आ० ॥ ५ ॥ तव धरणेंडासन कं  
पावे, पदमावति साथे त्यां आवे ॥ नाथ उरध सिर फ  
णीकुं धरावे, जई अपराधी देव मरावे ॥ आ० ॥ ६ ॥  
सांई सरण लहि समकित पावे, फणिपति नाटक विधि  
विरचावे ॥ प्रभु चरणे नमी गेह सधावे, जगदिश्वर घ  
नघाति हरावे ॥ आ० ॥ ७ ॥ साकारें केवल दुग पा  
वे, धर्म कही जिन नाम स्वपावे ॥ नूतल विचरी मोह  
सिधावे, अगुरु लघु गुण प्रभु निषजावे ॥ आ० ॥ ८ ॥  
आरत गतकी आरती गावे, श्रोता वक्तारति उतरावे॥मन  
मोहन प्रभु पास कहावे, श्रीशुनवीर ते शिश नमावे॥आ०

॥ अथः श्री श्रावक करणीनी स्वाध्याय ॥

॥ चोपाइ ॥ श्रावक तुं ऊठे परजात, चारघडीले पाठ  
जिरात ॥ मनमां समरे श्री नवकार, ज्यम पामे जब  
सायर पार ॥ १ ॥ कवण देव कवण गुरु धर्म, कवण  
अमारे ठे कुल कर्म ॥ कवण अमारे ठे ववसाय, एवं  
चिंतवजे मन मांय ॥ २ ॥ सामायिक लेजे मन सुद्ध,

धर्मनी हैडे धरजे बुद्ध ॥ पडिकमणो करे रयणी तणो,  
 पातिक आलोई आपणो ॥ ३ ॥ काया शक्ते करे पच  
 खाण, सूदि पाळे जिननी आण ॥ नणजे गणजे स्त  
 वन सजाय, जिणहुंती निस्तारो थाय ॥ ४ ॥ चितारे  
 नीत चउदे नीम, पाळे दया जीवतां सीम ॥ देहरे जा  
 ५ जुंहारे देव, ५व्य जावथी करजे सेव ॥ ५ ॥ पोसा  
 ले गुरु वंदजे जाय, सुणो वखाण सदाचित्त लाय ॥  
 निर दूषण सुजंतो आहार, साधुने देजे सुविचार ॥ ६ ॥  
 सामि वत्सल करजे घणो, सगपण मोटो सामितणो ॥  
 दुखीया हीणा दिनने देख, करजे तास दया सु विशेष ॥  
 ७ ॥ घर अनुसारे देजे दान, मोटाशुं तजजे अनि  
 मान ॥ गुरुने सुख लेजे आखडी, धर्मन सुकीश एके  
 घडी ॥ ८ ॥ वारु शुद्ध करे व्यापार, उंठा अधिकानो प  
 रिहार ॥ म नरजे केनी कुडी साख, कूडा जनशुं कथ  
 न म नाख ॥ ९ ॥ अनंत काय कही बत्रीश, अनद्ध  
 बाविशे विस्वा वीश ॥ ते नद्धण नवि कीजे किमे,  
 काचां कूणां फल मत जिमे ॥ १० ॥ रात्री नोजनना  
 बहु दोष, जाणोने करजे संतोष ॥ साजी साबु लोहने  
 गली, मधु धावडि मत वेचो वली ॥ ११ ॥ वलि मक  
 रावे रंगण पास, दूषण घणां कल्यांते तास ॥ पाणी ग

लजे बे बे वार, अणगल पीतां दोष अपार ॥ १२ ॥  
 जीवाणीनां करजे यत्न, पातीक ठंभी करजे पुन्य ॥ ठां  
 णा इंधण चूजो जोय, वावरजे ज्यम पापन होय ॥ १३ ॥  
 घृत परें वावरजे नीर, अणगल नीर मधोइस चीर ॥  
 ब्रह्म व्रत सूधुं पालजे, अतीचार सघला टालजे ॥ १४ ॥  
 कह्यां पन्नरे कर्मा दान, पापतणी परहरजे खाण ॥ शि  
 शम लेजे अनरथ दंन, मिथ्या मेल मजरजे पिंन ॥  
 ॥ १५ ॥ समकित शुद्ध हैडे राखजे, बोल विचारीने ना  
 खजे ॥ पांच तिथी म करजे आरंज, पालो शीलतजी  
 मन दंन ॥ १६ ॥ तेल तक्र घृत दुधने दहिं, उघा  
 डां मत मेलो सही ॥ उत्तम ठामे खरचो वित्त, पर उप  
 गार करो गुनचित्त ॥ १७ ॥ दिवश चरिम करजे चोवि  
 हार, चारे आहार तणो परिहार ॥ दिवस तणां आलो  
 ए पाप, ज्यम नांजे सघला संताप ॥ १८ ॥ संध्याए आव  
 इयक साचवे, जिनवर चरण सरण जवजवे ॥ चारे सर  
 ण करी इढ होय, सागारी अणसण ले सोय ॥ १९ ॥  
 करे मनोरथ मन एहवा, तीरथ शत्रुंजे जायवा ॥ समे  
 त शिखर आबु गिरनार, जेटीश हुं धन धन अवतार ॥  
 ॥ २० ॥ आवकनी करणी ठे एह, एहथी थाए जवना  
 ठेह ॥ आठे कर्म पडे पातला, पाप तणां बुटे आमला ॥



॥ ११ ॥ वारु लहिये अमर विमान, अनुक्रमे पामे शिव  
पुरधाम ॥ कहे जिन हर्ष घणे ससनेह, करणी दुख हर  
णी ठे एह ॥ १२ ॥ इति श्री श्रावकनी करणी संपूर्ण ॥

॥ अथः श्री आदिजिन स्तुती लिख्यते ॥

॥ आदि जिनवर राया, जास सोवन्न काया, मरुदेवी  
माया, धोरी लंठन पाया ॥ जगत धिती निपाया, शु  
द्ध चारीत्र पाया, केवल श्रीराया, मोहनगरे सधाया  
॥ १ ॥ सवि जिन सुखकारी, मोह मिथ्या निवारी, दु  
रगती दुःख जारी, शोक संताप वारी, श्रेणी कृपक सु  
धारी, केवलानंत धारी, नमियें नरनारी. जेह विश्वोप  
कारी ॥ २ ॥ समवसरण बेठा, लागे जे जिन मीठा,  
करे गणप पईठा, इंड चंडादि दीठा ॥ द्वादशांगी वरी  
ठा, गुंथता टाळे रीठा, जविजन होय होठा, देखि पु  
न्ये गरीठा ॥ ३ ॥ सुर समकित वंता, जेह कूँडे महं  
ता, जेह सजनसंता, टालियें मुक्क चिंता ॥ जिनवर से  
वंता, विघ्नवारे डुरंता. जिन उत्तम शुणंता, पद्मने सुखदिंता ॥

॥ अथः श्री तिर्यमाला स्तवन लिख्यते ॥

॥ शत्रुंजे कवन समोसखा, जला गुण नखारे ॥  
सिद्धा साधु अनंत, तीरथ ते नमुंरे ॥ तिन कव्याणक  
तिहां थया, मुगते गयारे ॥ नेमिसर गिरनार ॥ तीण ॥ १

( ५३ )

अष्टापद एक देहरो, गिरी सेहरोरे ॥ नरतें नराव्यां बिं  
ब ॥ ती० ॥ आबुचौमुख अतिनलो, त्रिचुवन तिलो  
रे ॥ विमल वसे वस्तु पाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेत शि  
खर सोहमणो, रत्नीयांमणोरे ॥ सिद्धा तिर्यकर वीश ॥  
ती० ॥ नयरी चंपा निरखीए, हैयें हरखीएरे ॥ सिद्धा श्री  
वासु पूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशे पावापुरी, रुद्धेनरीरे ॥  
मुगति गया महावीर ॥ ती० ॥ जेशलमेर जुहारीए, डख  
वारीयेंरे ॥ अरिहंत बिंब अनेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ वीकानेरज  
वंदीए, चिरनंदीएरे ॥ अरिहंत देहरां आव ॥ ती० ॥ सो  
रिसरो संखेश्वरो, पंचासरोरे ॥ फलोधी थंजणपास ॥ ती०  
॥ ५ ॥ अंतरीक अजावरो, अमीजरोरे ॥ जीरावल्लो जगना  
थ ॥ ती० ॥ त्रिलोक्य दीपक देहरो, जात्रा करोरे ॥ राणपु  
रे रिसहेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्रीनामुलाइ जादवो, गोडि स्त  
वोरे ॥ श्रीवरकाणो पास ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां देहरां,  
बावन जलारे ॥ रूचक कुंमले चार चार ॥ ती० ॥ ७ ॥  
साखती अशाश्वती, प्रतीमा ठतीरे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥  
ती० ॥ तीरथ जात्रा फल तिहां, होजो मुज इहारे ॥  
समय सुंदर कहे एम ॥ ती० ॥ ८ ॥ इतिश्री संपूर्ण ॥

॥ अथः श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ आखडीएरे मे आज शत्रुंजय दिगोरे ॥ सवा लाख

टकानो दाहाडोरे ॥ लागे मने मीठोरे ॥ सफल थयोरे  
 माहारा मननो उमाहो ॥ वाहला मारा नवनो संसय  
 जाग्योरे ॥ नरक तिर्यच गति दूर निवारी ॥ चरणे प्र  
 जुजीने लाग्योरे ॥ शत्रुंजय दिठोरे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥  
 मानव नवनो लाहो लीजे ॥ वा० ॥ देहडी पावन कीजे  
 रे ॥ सोना रुपाने फूलडे बधावी ॥ प्रेमे प्रदक्षिणा दिजेरे  
 ॥ शत्रूं० ॥ २ ॥ डुधडे पखालीने केशर घोली ॥ वा० ॥  
 श्री आदेश्वर पुज्यारे ॥ श्री सिद्धाचल नयणें जोतां ॥ पा  
 प में वासी धुज्यारे ॥ शत्रूं० ॥ ३ ॥ श्री मुख सुधर्मा सुर  
 पति आगे ॥ वा० ॥ वीर जिणंद एम बोलेरे ॥ त्रय्यचु  
 वनमां तीरथ म्होटुं ॥ नहिं कोइ शत्रूंजय तोलेरे ॥ श  
 त्रूं० ॥ ४ ॥ इंदू सरीखा ए तीरथनी ॥ वा० ॥ चाकरी  
 चित्तमां चाहेरे ॥ कायानी तो काह्यर काढी ॥ सुरज कुं  
 रुमां नाहेरे ॥ शत्रूं० ॥ ५ ॥ कांकरे कांकरे श्री सिद्ध  
 क्षेत्रे ॥ वा० ॥ साधु अनंता सिद्धारे ॥ ते माटे ए तीर  
 थ म्होटुं ॥ उदार अनंता कीधारे ॥ शत्रूं० ॥ ६ ॥  
 नाजि राया सुत नयणे जोतां ॥ वा० ॥ मेह अमीरश बू  
 ठारे ॥ उदय रत्न कहे आज म्हारे पोते ॥ श्री आदेश्व  
 रतूठारे ॥ शत्रूं० ॥ सवा० ॥ ७ ॥ इति श्री संपूर्ण ॥

( ५५ )

॥ अथः श्री सिद्धाचल स्तुति लिख्यते ॥

॥ विमलाचल मंमण, जिनवर आदि जिणंद ॥ निरमम  
निर मोही, केवल ज्ञान दिणंद ॥ जे पूर्व नवाणु, आब्या  
धरी आणंद ॥ शत्रुंजय शिखरे, समवशखा सुखकंद ॥ १ ॥  
ईणे चोवीशी, रूपनादिक जिनराय ॥ वज्रि काल अनंत, अनंत  
चोवीशी थाय ॥ ते सविज्ञ गिरिवर, आवी फरसी जा  
य ॥ एम नावि कानें, आवशे सविमुनिराय ॥ २ ॥ श्री  
रूपन नागणधर, पुंमरीक गुणवंत ॥ षादशअंग रचना, की  
धी जेणे महंत ॥ सवि आगममांहे, एनो महिमा महं  
त ॥ नाथो जिनगणधर, सेवो थिर करी चित्त ॥ ३ ॥ चक्रेशरी  
गोमुह, कवडपमुह सुरसार ॥ जसु सेवा कारण, थापे इं  
ड उदार ॥ देव चंड गणी नापे, नविजनने आधार ॥  
सवि तीरथ मांहे, सिद्धाचल शिरदार ॥ ४ ॥

॥ अथः सीमंधर जिननी थोय. ॥

॥ श्रीसीमंधर देव सुहंकर, मुनि मन पंकज हंसाजी ॥  
कुंथुअर जिन अंतर जनम्या, तिहुंअण जश परसंशा  
जी ॥ सुव्रत नमि अंतर वरी दिक्षा, शिक्षा जग निरा  
संजी ॥ उदय पेढाल जिनांतरमां प्रभु, जाशे शिव व  
हु पासंजी ॥ १ ॥ बत्रीश चउसठि चउसठि मजिया,  
इग सय सठि उक्किछाजी ॥ चउअड अडमली मध्यम

( ५६ )

काले, वीश जिनेश्वर दिछाजी ॥ दो चउ चार जघन्य  
दश जंबु, धायई पुरकर मोळारेजी ॥ पुजो प्रणमो आचा  
रांगें, प्रवचन सार उळारेजी ॥ १ ॥ सीमंधर वर केवल  
पामी, जिन पद खवण निमित्तेजी ॥ अर्थनी देशन  
वस्तु निवेशन, देतां सुणत विनितेजी ॥ षादश अंग पू  
रव युत रचियां, गणधर लब्धि विकसियाजी ॥ अपङ्क  
वसिय जिनागमवंदो, अक्षर पदना रसियाजी ॥ ३ ॥  
आणा रंगी समकित संगी, विविध जंग व्रतधारीजी ॥  
चउ विह संघ तीरथ रखवाली, सहु उपड्व हरनारीजी ॥  
पंचांगुली सुरि शासन देवी, देती तस जश रिहीजी ॥ श्री  
शुन वीर कहे शिव साधन, कार्य सकलमां सिहीजी ॥ ४ ॥

॥ अथः रूपन जिन चैत्य वंदन ॥

॥ जय जय नाजि नरिंद नंद, सिद्धाचल मंमण ॥  
जय जय प्रथम जिणंद कंद, नवडुःख विहंमण ॥ १ ॥  
जय जय साधु सुरिंद वृंद, वंदिय परमेश्वर ॥ जय  
जय जगदानंद कंद, श्री रूपन जिनेश्वर ॥ २ ॥ अमृ  
त सम-जिन धर्मनोए, दायक जगमां जाण ॥ तुज प  
द पंकज नित नमुं, निशदिन नमत कव्याण ॥ ३ ॥

॥ अथः श्री मंगलाचार प्रजात समये ॥

॥ श्लोक ॥ मंगलं जगवान् वीरो, मंगलं गौतमः प्र

જુઃ ॥ મંગલં સ્થૂલ જડાદ્યા, જૈનો ધર્મોસ્તુ મંગલં ॥ ૧ ॥  
 સર્વારિષ્ઠ પ્રણા શાય, સર્વાનીષ્ઠાર્થ દાયિને ॥ સર્વજ  
 લ્લિધિ નિધાનાય, ગૌતમ સ્વામિને નમઃ ॥ ૨ ॥ દોહરા ॥  
 અંગુઠે અમૃત વસે, લલ્લિધિ તણો જંમાર ॥ જે ગોયમ ગુ  
 રુ સમરિયે, વાંઝિત ફલ દાતાર ॥ ૩ ॥ પુંમરીક ગોય  
 મ પમુહ, ગણહર ગણ સંપન્ન ॥ પ્રહ્ ઉઠીને પ્રણમિયે,  
 ચતુર્દહસે બાવન્ન ॥ ૪ ॥ બોરસ કિમરસ કિન્નરશ, ચોથા  
 જસો જડશૂર ॥ ત્રિણે કાલે સમરતાં, ડુરિય પણાસે  
 દૂર ॥ ૫ ॥ જે ચારિત્રે નિરમલા, તે પંચાયણ સિંહ ॥  
 વિષય કષાયને ગંજિયા, તે સમરો નિશ દિંહ ॥ ૬ ॥  
 ગામ તણે પૈસારણે, ગોયમ ગુરુ સમરંત ॥ ઇચ્છા જો  
 જન ઘર કુશલ, લલ્લિ લીલ કરંત ॥ ૭ ॥ ચોપાડ ॥  
 વીર જિણેશ્વર કેરોશિષ્ય, ગૌતમ મામ જપો નિશદીશ  
 ॥ જો કીજે ગૌતમનું ધ્યાન, તો ઘર વિલસે નવે નિધા  
 ન ॥ ૧ ॥ ગૌતમ નામેં ગયવર ચઢે, મન વંઝિત હૈલા સં  
 પજે ॥ ગૌતમ નામેં નાવે રોગ, ગૌતમ નામે સર્વ સંજો  
 ગ ॥ ૨ ॥ જે વૈરી વિરુઝ્યા વંકડા, જસ નામે નાવે ટૂક-  
 ડા ॥ જૂત પ્રેત નવિ મંમૈ પ્રાણ, તે ગૌતમનાં કરું વસ્વા  
 ણ ॥ ૩ ॥ ગૌતમ નામેં નિર્મલ કાય, ગૌતમ નામેં વાધે  
 આય ॥ ગૌતમ જિણ સાશન સિણગાર, ગૌતમ નામેં

जय जय कार ॥४॥ साल दाल सुरदां घृत गोल, मन  
 वंछित कापड तंबोल ॥ घरे सुघरणी निरमल चित्त, गौ  
 तम नामें पुत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौतम उदयो अविचल  
 नाण, गौतम नाम जपो जग जाण ॥ मोटां मंदिर मे  
 रु समान, गौतम नामें सफल विहाण ॥६॥ घर मयगल  
 घोडांनी जोड, पद्दोचे वारु वंछित कोड ॥ महियल मा  
 ने मोटा राय, जो तुसे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम  
 प्रणम्यां पातिक टले, उत्तम सरसी संगति मले ॥ गौत  
 म नामें निरमल ज्ञान, गौतम नामें वाधेवान ॥ ८ ॥  
 पुन्य वंत अवधारो सहू, गुरु गौतमना गुणने बहू ॥ क  
 हे लावण्य समे करजोड, गौतम तूठे संपत कोड ॥ ९ ॥

॥ शार्दूल विक्रीडोत वृत ॥ ब्राह्मीचंदन बालिका जगवती  
 राजीमती झैपदी ॥ कौशल्याच मृगावतीच सुजसा सीता  
 सुनझाशिवा ॥ कुंती शीलवती नलस्य दयिता चूला प्र  
 नावल्यपि ॥ पद्मावल्यपि सुंदरी दिनमुखे कुर्वंतुवो मंगलं  
 ॥१॥ अहिम गोहिम गोधरणी सुतो, बुध वृहस्पति दानव  
 पूजिताः ॥ रविज राहुस केतु नवग्रहा, विदधतां सततं मम  
 संपदं ॥१॥ श्लोक ॥ सर्व मंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण  
 कारणं ॥ प्रधानं सर्व धर्माणं, जैनं जयति शासनं ॥२॥

॥ अथः सोल सतियोनी सजाय ॥

॥ आदिनाथ आदे जिनवर वंदी, सफल मनोरथ की  
 जीएँ ॥ प्रजाते उठी मंगलीक काजे, सोल सतिनां  
 नाम लीजीएँ ॥ १ ॥ बाल कुमारी जग हितकारी,  
 ब्राह्मि नरतनी बेहेनडीए ॥ घट घट व्यापित अक्षररूपे,  
 सोल सतिमांहे जे वडीए ॥ २ ॥ बाहु बल जगनी सती  
 शिरोमणी, सुंदरी नामे कृपजसुताए ॥ अंग स्वरूपे त्रि  
 चुवन मांहे, जेह अनुपम गुण युताए ॥ ३ ॥ चंदन  
 बाला बाल पणेशी, शियलवती शुद्ध श्राविकाए ॥ अ  
 डदने बाकुले वीरप्रती जान्या, केवल जही व्रत जाविका  
 ए ॥ ४ ॥ उग्रशेन धूया धारणी नंदनी, राजीमती नेम  
 वध्रजाए ॥ योवन वेपे कामने जीती, संयम जिये देव  
 डध्रजाए ॥ ५ ॥ पंच नरतारी पांमवनारी, द्रुपद तनया  
 वखाणीएँ ॥ एक सो आठे चीर पुराणां, शियल म  
 हिमा तसु जाणीएँ ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारी निरु  
 पम, कौशल्या कुल चंडिकाए ॥ शियल सलुणी राम  
 जनेता, पुन्यतणी पर नालिकाए ॥ ७ ॥ कोसंबिक उ  
 मे सतानीक नामे, राज्य करे रंग राजीउए ॥ तसु घ  
 र घरणी मृगावति सती, सुरचुवने जश गाजीउए ॥ ८ ॥  
 सुजसा साची शियले न काची, राचीनहीं विषया रशें ॥



मुखडुं जोतां पाप पुलाए, नाम लेतां मन उद्धसेए  
 ॥ ९ ॥ राम रघुवंशी तेहनी कामनी, जनक सुता  
 सिता सतीए ॥ जग सहु जाणे धीरज करंतां, अनल  
 शीतल थयो शियलथीए ॥ १० ॥ काचे तांतणे चार  
 णी बांधी, कुआ थकी जल काढीउंए ॥ कलंक उतारवा  
 सती सुनडा, चंपा बार उघाडिउंए ॥ ११ ॥ सुरनर  
 वंदीत शील अखंभीत, शिवा शीवपद गामनीए ॥  
 जेहने नामे निरमल थइए, बलिहारी तसु नामनी  
 ए ॥ १२ ॥ हस्तिनापुरे पंरुरायनी, कुंता नामे का  
 मनीए ॥ पांमव मातादशे दशारनी, बहेन पतिव्रता पद्मनी  
 ए ॥ १३ ॥ शिल वती नामे शील व्रत धारणी, त्रिविधे  
 तेहने वंदीएंए ॥ नाम जपंतां पातीक जाए, दर्शन दूरीत  
 निकंदीएंए ॥ १४ ॥ नैषथा नयरी नल नरींदनी, दम  
 यंती तसु गेहनी ए ॥ संकट पडतां शीयलज राखुं, त्रिभुव  
 न कीरती एहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग जीता ते जगजन  
 पूजिता, पुष्प चूला ने प्रजावती ए ॥ विश्व विख्याता का  
 मित दाता, शोलमी सति पद्मावती ए ॥ १६ ॥ वीरे जा  
 खी शास्त्र ठे साखी, उदय रत्न जंपे मुदाए ॥ व्हाणुं  
 वाहातां जे नर नणसे, ते जेसे सुख संपदाए ॥ १७ ॥

---

